Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-14 | सम्पादक | दिनांक 20 जून से 26 जून 2018 तक | वार्षिक शुल्क 150 रुपये
कल्पादि सम्वत् 1972949118 | मुन्ना कुमार शर्मा | द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी से द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी 2075 तक | पृष्ठ संख्या 12

बेमौत मरते ये रिश्ते... पृष्ठ- 2
और मजबूत हो... पृष्ठ- 3
डायबिटीज कन्ट्रोलर.. पृष्ठ- 4
माखनलाल चतुर्वेदी... पृष्ठ- 9
देश की जुमलेबाज... पृष्ठ- 12

- खिचर्नी चाहिए लक्ष्मण रेखा
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और डॉक्टर हेडगेवार
- राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गीत की कहानी
- कश्मीर में रमजान पर युद्ध-विराम
- राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिये जम्मू बचाओ कश्मीर बचाओ

पाकिस्तान ने हिंदू भक्तों के लिए उठाया बड़ा कदम, कृष्ण मंदिर के लिए दिए २ करोड़ रुपए

हिन्दू मंदिरों को सुरक्षा प्रदान करे पाकिस्तान–हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सरकार ने रावलपिंडी में स्थित कृष्ण मंदिर के सौंदर्यीकरण एवं इसके विस्तार के लिए दो करोड़ रुपए की राशि जारी की है। यह जानकारी मीडिया की एक रिपोर्ट में दी गयी है। रावलपिंडी और इस्लामाबाद शहरों में केवल कृष्ण मंदिर ही ऐसा एकमात्र मंदिर है जो श्रद्धालुओं के लिए खुला है। मंदिर में हर दिन सुबह और शाम दो बार आरती की जाती है जिसमें छह से सात लोग उपस्थित रहते हैं। डान समाचार पत्र ने इवैक्यूई ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड ईटीपीबी उप प्रशासक मोहम्मद आसिफ के हवाले शेष पृष्ठ 11 पर

जम्मू कश्मीर अंतरराष्ट्रीय सीमा पर इस साल सीमा पार गोलीबारी में ३०० फीसदी की बढ़ोतरी

सीमापार घुसपैठ तुरन्त बन्द हो–हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

जम्मू कश्मीर में इस साल अब तक भारत–पाक सीमा पर सीमा पार से गोलीबारी की घटनाओं में ३०० फीसद से ज्यादा की बढ़ोतरी देखने को मिली है जिसकी वजह से पिछले पांच सालों में इस साल बीएसएफ के हताहतों का आंकड़ा सबसे ज्यादा है। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक इस साल अब तक बिना उकसावे के गोलीबारी की ३०० से ज्यादा घटनाएं हो चुकी हैं। जिनमें सीमा सुरक्षा बल के पांच जवानों को अपनी जान गंवानी पड़ी जबकि जम्मू क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात ३४ जवान गोलीबारी में जख्मी हो गए। पिछले साल इस सीमा पर बिना उकसावे की गोलीबारी की कुल १११ घटनाएं सामने आई थीं जबकि वर्ष २०१६ में २०४, २०१५ में ३५० और २०१४ में १२७ मामले सामने आए थे। पिछले साल पाकिस्तानी स्नाइपरों द्वारा की गई गोलीबारी से सीमा पर तैनात दो जवानों की मौत हुई थी जबकि सात अन्य घायल हुए थे। २०१६ में ऐसी घटनाओं में तीन बीएसएफ जवान मारे गए थे जबकि १० अन्य घायल हुए थे। पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तान के साथ तनाव के मद्देनजर गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर निगरानी बढ़ाने का आदेश दिया है। गृह मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि एक उच्च स्तरीय बैठक में यह निर्देश दिए गए बैठक भारत के पड़ोसी देशों से लगने वाली सीमा पर बाड़ लगाने, सड़क और चौकियों के निर्माण में हुई प्रगति की समीक्षा के लिये बुलाई गई थी। प्रवक्ता ने कहा कि गृह मंत्री ने यह भी निर्देश दिया कि सीमाओं पर लगातार चौकसी और शेष पृष्ठ 11 पर

बेमौत मरते ये रिश्ते

✍ प्रो. श्यामलाल कौशल

जब परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की तो समाज में रहने वाले समझदार लोगों ने मानवीय जीवन को सुख, शांति, बुजुर्गों की देखभाल तथा सेवा बच्चों, स्त्रियों तथा गरीबों की देखभाल के मॉ, बाप, पति–पत्नी, भाई, बहन, बेटा, बेटी, पड़ोसी, मित्र तथा अन्य सम्बंधियों की कल्पना की। इन रिश्तों की शुरूआत का उद्देश्य यह था कि लोग किसी न किसी तरह से एक दूसरे को अपना समझें तथा एक दूसरे की दुःख सुख में सहायता करे। इन रिश्तों के कारण ही सभ्य समाज का विकास हुआ तथा लोगों ने सभ्यता, संस्कार तथा परम्परा के मुताबिक रहना शुरू किया। विभिन्न प्रकार के होली, लोहड़ी, दशहरा, दीवाली, ईद, पोंगल आदि त्योहार की शुरूआत हुई और लोगों में अपनी सौहार्दपूर्ण, रिश्तों का विकास तथा प्रचलन शुरू हो गया। लेकिन आज के बदले हुए हालात को देखते हुए रिश्ते बेमायने होकर बेमौत मर रहे हैं। लोग काम, क्रोध, लोभ मोह, मद, अहंकार तथा स्वार्थ के वशीभूत होकर सभी रिश्तों को खाक में मिला रहे हैं। आज पति–पत्नि के पवित्र रिश्ते तथा गृहस्थी को कूड़ेदान में फेंका जा रहा है। कहीं भी पति–पत्नी का आपस में परम्परागत पवित्र रिश्ता नहीं रहा। किसी तीसरे में दिलचस्पी रखना, बच्चों के सामने एक दूसरे को अपमानित, तिरस्कृत तथा प्रताड़ित करना तथा हाथ उठाना, आम बात होती जा रही है। जब पति–पत्नी एक दूसरे के साथ प्रेम, प्यार, विश्वास, सहयोग, संयम सम्मान तथा समर्पित भावना के साथ नहीं रहेंगे तो घर रूपी संस्था तो निश्चित तौर पर टूटेगी ही। आज परिवार में बुजुर्गों की बड़ी दुर्दशा हो रही है। उन्हें परिवार पर फालतू का बोझ समझा जाता है, परिवार वाले उनकी सम्पत्ति पर कब्जा करके जल्दी से जल्दी मृत्यु लोक भेजने की कामना करते हैं। बुजुर्गों के प्रति इस प्रकार का घटिया तथा शर्मनाक व्यवहार करने वाले जवान बेटे तथा बहुएं यह भूल जाते हैं कि जब वे स्वयं बूढ़े होंगे तथा उनके बच्चे भी उनके साथ इससे भी ज्यादा बुरा व्यवहार करके उनके कर्मों का फल देंगे। आज सम्पत्ति को लेकर भाई–भाई तथा भाई–बहन एक दूसरे के खून के प्यासे बन रहे हैं। सम्पत्ति प्राप्त करने के लिये वे किसी की भी हत्या कर सकते हैं या सुपारी देकर हत्या करवा सकते हैं। कुछ समय पहले हरियाणा के हिसार जिले में धन सम्पत्ति की लालची एक बेटी ने अपने कलियुगी पति के साथ मिलकर अपने मां बाप तथा परिवार के अन्य सदस्यों को मौत की नींद सुला दिया था। आजकल कामवासना ने लोगों को ऐसा अपना गुलाम बना रहा है कि वे इसके सामने किसी भी रिश्ते को नहीं मानते। जिस नन्ही मुन्नी कन्या के पैदा होने पर पिता उसे लक्ष्मी, सरस्वती तथा दुर्गा का स्वरूप मानकर उसकी पूजा व अराधना करता है बड़ा होने पर उसी बेटी की लाज औरों से तो क्या बचायेगा अपने ही घर की चार दीवारी के अन्दर बड़ी निर्दयता तथा निर्लज्जता से पशु की तरह उसकी आबरू को तार–तार करने का वह घोर अपराध उसका अपना पिता करता है। बेटे के जिस बहु को वह बड़े चाव तथा मान सम्मान के साथ अपने घर में लाता है, बेटी समान उसी बहू पर भी उसकी नापाक नजर भूखे भेड़िये की तरह शिकार करने के लिए छटपटाती रहती है। वाह रे कलियुगी बाप। जब रक्षक ही भक्षक बन जाये तो बेचारी बेटी–बहू किसके आगे फरियाद कर सकती है। किसी जमाने में गुरु को बाप या मार्गदर्शक का स्थान प्राप्त था। आजकल के शिक्षक अपनी शिष्याओं को बहन या बेटी तो क्या समझेंगे उसी को अपनी कामवासना का शिकार बनाकर अपने साथियों के साथ मिलकर उसको ब्लैकमेल कर उसका बलात्कार कर रहे हैं। स्वार्थ सिद्धि के लिए लोग अपने गरीब भाई–बहनों के बदले में अमीर बेगानो से सम्बन्ध बढ़ाना ज्यादा बेहतर समझते हैं। खून पानी हो गया है। आज संस्कारों, परम्पराओं तथा मर्यादाओं का जनाजा निकल गया है। मित्रों, पड़ोसियों और तथाकथित शुभचिंतकों पर आजकल किसी प्रकार से विश्वास या भरोसा करने का जमाना लद गया है। आज हर आदमी अपनेपन को तरस रहा है जो उसे कही भी नहीं मिलता। मां, बाप, भाइ, बहन, पति, पत्नी, बेटा, बेटी, मित्र सम्बंधी तथा पड़ोसी के रिश्ते समाप्त होते जा रहे है। आज पुत्र के वियोग में प्राण त्यागने वाले न तो दशरथ जैसे पिता शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह परिवार के कर्तव्यों का बोझ बढ़ेगा किन्तु आप अपने हितों की अनदेखी न करें अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा। किसी जरूरी कार्य के प्रति जा रहें है, तो थोड़ी सी केसर खाकर निकलें। किसी के प्रति सहानुभूति आपको मुसीबत में डाल सकती है।

वृष - इस सप्ताह अपनी रणनीतियों को सबके समक्ष उजागर करना उचित नहीं है। आवश्यक कार्यो के लिए किसी पर निर्भर होना उचित नहीं है। हर असफलता से कुछ सीखने को मिलता है, यदि आप सबक ले रहें है। इसका मतलब आप सफलता के बहुत नजदीक है।

मिथुन - इस सप्ताह मनः स्थिति नियन्त्रण बनायें रखने की आवश्यकता है। सोच–विचार कर कदम बढ़ानें की ज़रूरत है अन्यथा कोई हानिप्रद घटना होने की आशंका के संकेत नज़र आ रहें है। नयें लोगों को व्यवसाय व कैरियर में सफलता मिलने के आसार नजर आ रहे है।

कर्क - इस सप्ताहं कुछ लोगों का राजकीय कार्यो में फंसा हुआ रूपया मिलने की सम्भावना है। प्रतियोगी छात्रों के लिए समय उचित है। वाहन आदि के प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है। नवयुवकों को किसी कारणवश तनाव हो सकता है।

सिंह - मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता है। मन के जीते जीत है और मन के हारे हार। योजानायें बनाने से कार्य नहीं चलेगा उस पर अमल भी करना पड़ेगा। कुछ लोगों को जीविका के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। आय व व्यय में समानता बनी रहेगी।

कन्या - कुछ लोग जो सभी को अपने अधिकार में रखने का जो ख्याल पालें हुयें है, इसके दूरगामी परिणाम बेहतर नहीं होंगे और एक ऐसा समय आयेगा जब आपसे लोग कन्नी–काटने लगेंगे। अतः अपने व्यवहार में बदलाव लाने का प्रयास करें।

तुला - इस सप्ताह कुछ लोग अपने जीवन में निरन्तर संघर्ष करने से दुःखी हो रहे है, परन्तु संघर्ष ही सफलता का पर्याय है। नवयुवक अपने प्यार की सीमा को निर्धारित करें तभी आप–अपने लक्ष्य का भेदन कर सकते है। व्यर्थ के तर्क–वितर्क में न पड़े अन्यथा तनाव हो सकता है।

वृश्चिक - यह सप्ताह कुछ लोगों के लिए चुनौतियों से भरा प्रतीत होगा, आपको धैर्य व साहस का परिचय देना है। स्वंय अपने विवेक व दिल की बातों को तवज्जों दें। इष्ट मित्रों से सहचर्य का भाव बानायें रखें। इच्छाओं को इतना ज्यादा हावी न हो।

धनु - यह सप्ताह कुछ लोगों के लिए चुनौतियों से भरा प्रतीत होगा, आपको धैर्य व साहस का परिचय देना है। स्वयं अपने विवेक व दिल की बातों को तवज्जों दें। इष्ट मित्रों से सहचर्य का भाव बनायें रखें। इच्छाओं को इतना ज्यादा हावी न होने दे कि आपका स्वाभिमान दांव पर लग जायें।

मकर - इस सप्ताह किसी से व्यावसायिक अनुबन्ध करने से पूर्व उसका निरीक्षण–परीक्षण अवश्य लें अन्यथा, का पछितावे होत है,जब चिढ़िया चुग गयी खेत वाली कहावत चरितार्थ हो सकती है। पिता व पुत्र में कुछ बातों को लेकर टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

कुम्भ - सकारात्मक विचारों को गति देने की जरूरत है, सामाजिक अवरोध आपके साहस को हिला नहीं पायेंगे। छात्रों को इस समय अपनी वाणी नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। आपके कार्यो में प्रतिपल चुनौतियों का दौर चल रहा है और आप बेहतर तरीके से मुकाबला भी कर रहें है।

मीन - इस समय बिजनेस व कैरियर में दूरदर्शिता बनायें रखने की आवश्यकता है। सोच–समझकर किये गये निवेश लाभप्रद साबित होंगे। किसी भी योजना को बनायें परन्तु उसे गुप्त रखना अपरिहार्य है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः।।

कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, बहुत गरम, तीखे, रूखे, दाहकारक और दुःख, चिन्ता तथा रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ राजस पुरुष को प्रिय होते हैं।।९।।

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।।

जो भोजन अधपका, रसरहित, दुर्गन्धयुक्त, बासी और उच्छिष्ट है तथा जो अपवित्र भी हैं, वह भोजन तामस पुरुष को प्रिय होता है।।१०।।

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय च सात्त्विकः।।

जो शास्त्रविधि से नियत, यज्ञ करना ही कर्तव्य है– इस प्रकार मन को समाधान करके, फल न चाहने वाले पुरुषों द्वारा किया जाता है, वह सात्त्विक है।।११।।

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्।।

परन्तु हे अर्जुन! केवल दम्भाचरण के लिये अथवा फल को भी दृष्टि में रखकर जो यज्ञ किया जाता है, उस यज्ञ को तू राजस जान।।१२।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 20 जून से 26 जून 2018 तक

अध्यक्षीय

और मजबूत हो रिश्ते

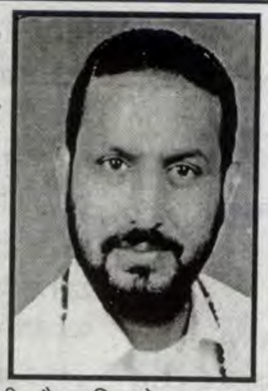

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और रूस के राष्ट्रपति व्लादीमीर पुतिन की सोची शहर में हुई मुलाकात कई मायनों में यादगार कही जा रही है। काले सागर के तट पर बसे इस शहर में दोनों शासन प्रमुखों की अनौपचारिक मुलाकात हुई। अभी हाल ही में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भी मोदीजी ने अनौपचारिक मुलाकात की थी। उनके सम्मान में हिंदी फिल्मों का संगीत बजा था और नौकाविहार का आनंद भी दोनों नेताओं ने उठाया था। अब रूस के सोची शहर में भी मोदी और पुतिन ने एक साथ नौका विहार किया, छात्रों को संबोधित किया, देश–दुनिया के कई मुद्दों पर अनौपचारिक चर्चा की और साथ में पुरानी यादों को ताजा किया। वैश्विक राजनीति में अमूमन शीर्ष स्तर पर नेताओं की औपचारिक माहौल में, पहले से तय एजेंडे पर औपचारिक चर्चा ही होती है। लेकिन जब राजनीतिक समीकरण बदल रहे हैं तो तौर–तरीकों में भी बदलाव आ रहा है। खैर, नरेन्द्र मोदी ऐसे वक्त रूस पहुंचे, जब व्लादीमीर पुतिन ने चौथी बार रूस की कमान संभाली है और एक ताकतवर वैश्विक नेता के रूप में उनकी पहचान नए सिरे से रेखांकित हुई है। हाल ही में जर्मनी से एजेंला मार्केल ने रूस में पुतिन से भेंट की थी और अब इमैनुअल मैक्रों भी रूस जाने वाले हैं। बीते दिनों अमेरिका ने ईरान से हुए परमाणु करार से अलग होने का जो फैसला लिया है, उससे ये तमाम देश अमेरिका से नाराज हैं, साथ ही उसके होने वाले परिणामों को लेकर चिंतित भी। डोनाल्ड ट्रंप अपनी जिद छोड़ने तैयार ही नहीं हैं, भले उससे विश्व में अशांति और अस्थिरता क्यों न बढ़ जाए। अमेरिका धमकी भी दे रहा है कि जो ईरान से संबंध रखेगा, उससे वे सब रिश्ते तोड़ लेंगे। हालांकि यह परमाणु संबंधों की बात होगी, लेकिन फिर भी अंतरराष्ट्रीय पटल पर ऐसी घुड़कियों से तनाव बढ़ता है। जहां तक भारत की बात है, तो हमारे ईरान से व्यापारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। हम उससे कच्चा तेल खरीदते हैं। अभी भारत वहां चाबहार बंदरगाह विकसित कर रहा है। जिसका खुद हमारे लिए आर्थिक, सामरिक महत्व है। ऐसे में भारत–ईरान के रिश्तों पर अमरीकी छाया न पड़े, यह हमें देखना है और इसमें रूस हमारी मदद कर सकता है। रूस ईरान का भी मित्र है और हमारा पुराना हितैषी तो है ही। प्रधानमंत्री मोदी जून में होने वाली शंघाई सहयोग संगठन और जुलाई में ब्रिक्स की बैठक में राष्ट्रपति पुतिन से मिलेंगे ही, लेकिन उससे पहले ऐसी अनौपचारिक मुलाकात का होना ठीक ही हुआ। क्योंकि पिछले कुछ समय से भारत की विदेश नीति में जो बदलाव आया है, उससे रूस के लिए बहुत अच्छे संकेत नहीं गए हैं। मोदीजी दोनों हाथों में लड्डू रखना चाहते हैं। वे इजरायल का सगा भी दिखना चाहते हैं और फिलीस्तीन के सगे भी बने रहना चाहते हैं। वे अमेरिका को भी मित्र बताते हैं और रूस से पुरानी दोस्ती का हवाला भी देते हैं। निजी तौर आप किसी भी वैश्विक नेता को नाम से बुलाने वाले या अचानक उसके घर पहुंच जाने वाले संबंध भले रखें, लेकिन जब देश की बात होती है तो कहीं कोई रेखा खींचनी ही पड़ती है, ताकि संतुलन बना रहे। अभी भारत के सामने संतुलन दिखाने की ही परीक्षा है। सीरिया और यूक्रेन के मसले पर अमेरिका और रूस में काफी तल्खी बढ़ी हुई है। रूस पर अमेरिका नए प्रतिबंध लगा सकता है और जो देश उसके साथ खुफिया व रक्षा संबंध रखते हैंए उन पर भी प्रतिबंध लगाने की धमकी दे रहा है। जबकि भारत तो रूस से बड़े रक्षा सौदे करता रहा है। अब हमारे सामने चुनौती है कि हम अमेरिका से डर कर, दब कर रहें या बिना झिझक के रूस से दोस्ती बनाएं रखें। रूस से केवल पुरानी दोस्ती को बनाए रखना ही नहीं, आगे बचा कर रखना भी भारत के लिए जरूरी है। अभी पाकिस्तान और रूस के बीच रक्षा सौदे शुरू हो गए हैं, जो भारत के लिए तो कतई अच्छी बात नहीं है। अब तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत–पाक मसले पर रूस ने हमेशा भारत का साथ दिया है। लेकिन अगर रूस और पाकिस्तान के बीच संबंध व्यापार से आगे बढ़ें तो भारत रूस को कैसे साधेगा, यह बड़ा सवाल है। मोदीजी ने इस अनौपचारिक मुलाकात में बार–बार पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी को याद किया और कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री वाजपेयी और राष्ट्रपति पुतिन द्वारा बोये गये रणनीतिक साझेदारी के बीज अब दोनों देशों के बीच विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी में तब्दील हो गये हैं। अगर वे पूरा इतिहास याद करें तो पाएंगे कि रूस के साथ हमारी यह घनिष्ठ और परखी हुई मित्रता नेहरूजी की देन है। अगर वे नेहरूजी की बनाई विदेश नीति पर चलें तो संतुलन साधने में भी उन्हें मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

खिचनीं चाहिए लक्ष्मण रेखा

कर्नाटक का नाटकीय घटनाक्रम सभी ने देखा। कभी विधानसभा, तो कभी उसके बाहर, तो कभी सुप्रीम कोर्ट तक यह संघर्ष चला। आप आइपीएल देख रहे होंगे, इसमें कभी कोई टीम जीतती है और कभी दूसरी टीम का पलड़ा भारी होता है। सियासत और क्रिकेट में इस बार काफी समानता देखने को मिली। क्रिकेट में भी सारे दांव पेच खेल जाते हैं, रणनीति बनती है। मैदान के अंदर बाहर खिलाड़ियों के बीच गर्मागर्मी भी होती है। लेकिन इसको नियंत्रित करने मैदान में दो अंपायर मौजूद रहते हैं और तीसरा अंपायर मैदान के बाहर कैमरे की मदद से खेल पर नजर रखता है। लोकतंत्र में भी राज्यपाल और राष्ट्रपति की ऐसी ही भूमिका है। न्यायपालिका तीसरे अंपायर की भूमिका में रहती है। अंपायरों से तटस्थता की उम्मीद की जाती है, लेकिन अगर अंपायर की भूमिका पर भी सवाल उठने लगें। तो खेल के निष्पक्ष होने पर संदेह पैदा हो जाता है, सियासत जमकर करें, लेकिन लोकतांत्रिक व्यवस्था पर सवाल नहीं उठने चाहिए। उस पर जनता का भरोसा कम नहीं होना चाहिए। कर्नाटक के हाल के सियासी घटनाक्रम में राज्यपाल की भूमिका पर सवाल उठ खड़े हुए है, यह पहला मौका नहीं है कि राज्यपाल सवालों के घेरे में आये हैं, लेकिन इस घटनाक्रम ने पुराने जख्मों को हरा कर दिया है। कर्नाटक में जो हुआ, वह कोई नयी बात नहीं है। सभी जानते हैं कि राज्यपालों की नियुक्ति राजनीतिक होती है। ज्यादातर केंद्र में सत्तारूढ़ दल से संबद्ध नेता होते हैं। ये प्राय पार्टी के पुराने निष्ठावान कार्यकर्ता होते हैं। हालांकि उनसे अपेक्षा की जाती है कि राज्यपाल बनने के बाद वे दलीय राजनीति से ऊपर उठकर कार्य करेंगे। लेकिन व्यवहार में ऐसा होता नहीं है, वे निष्ठावान कार्यकर्ता बने रहते हैं। यह बात सभी दलों के संदर्भ में लागू होती है। इसमें कोई शक नहीं है कि कांग्रेस के शासन के दौरान राज्यपाल पद का जमकर दुरुपयोग हुआ। गैर लोकतांत्रिक तरीके से अनेक सरकारें बर्खास्त की गयीं, राज्यपालों ने अनेक विवादित फैसले सुनाये। राज्यपालों के असंवैधानिक फैसलों की लंबी फेहरिस्त है। केंद्रीय नेतृत्व को खुश करने के लिए राज्यपालों ने क्या कुछ नहीं किया। बस यहीं से राज्यपाल पद की गरिमा का क्षरण हुआ, लेकिन कभी तो परिस्थितियां बदलें। यह तर्क कि उन्होंने गलत किया तो आपका भी गलत करने का अधिकार बनता है। संविधान के अनुच्छेद १५५ में है कि राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जायेगी, लेकिन हकीकत में राष्ट्रपति केंद्र सरकार की सिफारिश के आधार पर ही राज्यपालों की नियुक्ति करते हैं। आजादी के बाद पहले डेढ़ दशक तक राज्यपाल की नियुक्ति से पहले संबंधित राज्य के मुख्यमंत्री से सलाह करने की परंपरा थी। १९६७ में कुछ राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें सत्ता में आ गयीं, तो कांग्रेस ने इस परंपरा को ही बंद कर दिया। सरकारिया आयोग की सलाह थी कि राज्यपाल का चयन राजनीति में सक्रिय व्यक्तियों में से नहीं होना चाहिए, आयोग की सिफारिश थी कि राज्यपालों का चयन केंद्र सरकार नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र समिति करे। जिसमें प्रधानमंत्री के अलावा लोकसभा अध्यक्ष, देश के उपराष्ट्रपति और राज्य के मुख्यमंत्री भी शामिल हों। सरकारिया आयोग का कहना था कि संविधान निमार्ताओं ने राज्यपाल को केंद्र के प्रतिनिधि के रूप में नहीं, बल्कि संघीय व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा था। लेकिन इन सिफारिशों को रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया। राज्यपालों के असंवैधानिक फैसलों का शिकार अधिकांश राज्य रहे हैं। कर्नाटक इसका केंद्र रहा है, राज्य में पहले भी भारी विवाद हुए हैं और मामला सुप्रीम के हस्तक्षेप के बाद जाकर थमा है। कर्नाटक में १९८३ में पहली बार जनता पार्टी की सरकार बनी, रामकृष्ण हेगड़े मुख्यमंत्री बने। उनके बाद अगस्त १९८८ में एसआर बोम्मई कर्नाटक के मुख्यमंत्री बने, कर्नाटक के तत्कालीन राज्यपाल पी वेंकटसुबैया ने २१ अप्रैल १९८९ को नैतिकता के आधार पर बोम्मई सरकार को बर्खास्त कर दिया। राज्यपाल सुबैया ने कहा कि बोम्मई सरकार विधानसभा में अपना बहुमत खो चुकी है। बोम्मई ने विधानसभा में बहुमत साबित करने के लिए राज्यपाल से अनुमति मांगी, लेकिन उन्होंने इससे इंकार कर दिया। बोम्मई ने राज्यपाल के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। सुप्रीम कोर्ट के नौ न्यायाधीशों की संवैधानिक खंडपीठ ने एसआर बोम्मई बनाम भारत संघ मामले में बहुचर्चित निर्णय दिया। इसमें संविधान के अनुच्छेद ३५६ के दुरुपयोग को रोकने के लिए स्पष्ट दिशा–निर्देश थे। इस निर्णय की बड़ी विशेषता यह है कि इसने अनुच्छेद ३५६ के प्रयोग को अदालतों द्वारा समीक्षा न कर सकने की परंपरा को उलट दिया। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट शब्दों में कहा– उन सभी मामलों में जहां कुछ विधायकों द्वारा सरकार से समर्थन वापस लेने की बात हो, बहुमत के निर्धारण का उचित तरीका सदन में शक्ति परीक्षण है। न कि किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत मत, भले ही वह राज्यपाल हो या राष्ट्रपति। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद बोम्मई सरकार फिर से बहाल हुई। बोम्मई फैसला भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में अहम फैसला माना जाता है। ऐसी उम्मीद की गयी थी कि इस फैसले के बाद राज्यपालों के मनमाने रवैये पर लगाम लगेगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। इसके बाद भी राज्यपालों की भूमिका पर गंभीर सवाल उठते रहे हैं। वक्त आ गया है कि राज्यपालों के लिए लक्ष्मण रेखा का निर्धारण हो, ताकि लोकतांत्रिक व्यवस्था को कोई आघात न पहुंचे।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव
E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

बवासीर बादी

रीठे के छिलके तथा श्वेत कत्था

दोनों को समभाग लें। रीठे के छिलकों को तवे पर इतना भूनें कि उनका तेल न जलने पाए। जब आपस में चिकने लगें और भुन जाएँ तब उतारकर रीठे और कथा दोनों को खरल करके चूर्ण बना लें। ४ ग्रेन से ८ ग्रेन तक इस चूर्ण को मक्खन के साथ खाने से बादी बसासीर अवश्य नष्ट होती है। अचूक औषधि है। इसके सेवन से कब्ज, बवासीर की खाज ओर मस्सों को बिल्कुल आराम आ जाता है। रक्त बन्द हो जाता है। यदि छह मास के पश्चात् एक बार पुनः ७ दिन के लिए प्रयोग कर लिया जाए तो आयु–भर रोग उभरे का डर नहीं रहता।

परहेज - तीन दिन तक नमक ना खाएँ। सात दिन तक खटाई से परहेज रखें।

छिलका - रहित ५० ग्राम इमली के बीज तवे पर भून लें, फिर कूट–पीसकर चूर्ण बना लें। प्रातः ६ ग्राम चूर्ण को ५० ग्राम दही में मिलाकर खाएँ।

बरना के पत्ते ७, कालीमिर्च, नग। दोनों को सिल बट्टे से घोट–पीसकर ठण्डाई बनाकर पीएं। खूनी बादी सब प्रकार की बवासीर ७ दिन में जड़मूल से नष्ट हो जाएगी।

नोट - आवश्यकता समझें तो मीठा करने के लिए थोड़ी चीनी मिला सकते हैं।

हरसिंगार के बीज छिले हुए १० ग्राम, कालीमिर्च ३ ग्राम दोनों को पीसकर गुदा पर लेप करने से बवासीर नष्ट होती है।

बवासीर - सर्वप्रकार

१. मूली का रस १२५ ग्राम, जलेबी शुद्ध घी में बनी १०० ग्राम।

मूली के रस में जलेबी को एक घण्टे भीगनें दें, तत्पश्चात् जलेबी खाकर पानी को पी जाएँ। एक सप्ताह सेवन करने से बवासीर जीवन भर के लिए विदा हो जाती है।

२. चार प्यालों में धारोष्ण गो दुग्ध लें। इन प्यालों में क्रमशः आधा–आधा नींबू का रस निचोड़कर पीते जाएँ। ५–६ दिन के प्रयोग से ही लाभ प्रतीत होने लगता है।

३. नागकेसर और सफेद सुर्मा, दोनों समभाग लें और कूट–पीसकर कपड़े से छान कर लें। प्रतिदिन प्रातः सायं आधा–आधा ग्राम दवा ६ ग्राम शहद में मिलकार चाटें। सभी प्रकार की बवासीरों में आश्चर्यजनक लाभदायक है।

४. कच्चे अनार का छिलका (नासपाल) बारीक कूटकर कपड़छज्ञन कर लें। ३ ग्राम चूर्ण १०० ग्राम दही में मिलकार प्रातः–सायं दोनों समय खाली पेट सेवन करें।

५. आवश्यकतानुसार कपूर लेकर बारीक पीस लें। प्रातः ५ ग्राम चूर्ण पानी के साथ फांक लिया करें। दो सप्ताह तक सेवन करने से सर्वप्रकार की बवासीर ठीक हो जाती है।

६. इन्द्रायण फल ८ किलो काटकर कड़ाही में डाल दें। उस पर रोगी को खड़ा कर दें और उससे कहें कि जब उसका मुंह कड़वा न हो जाए तब तक उन्हें पैरों से मलता रहे। मुंह में कड़वास पहुंचने पर रोगी को लिटा दें। थोड़ी देर पश्चात् अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त दस्त होगा तथा रोगी सदैव के लिए अर्श रोग से छुटकारा पा जाएगा।

७. अपामार्ग (चिरचिटा) के पत्ते ६ ग्राम, कालीमिर्च ५ नग, दोनों को ठण्डाई की भांति घोटकर पिलाने से बवासीर दूर होती हैं। दवा खाने के बाद रोटी और घी का प्रयोग करें।

८. काली जीरी ५० ग्राम लें। आधी को भून लें और को कच्ची ही रहने दें। फिर दोनों को कूट–पीसकर आधा कर लें। ३–३ दवा प्रातः सायं पानी के साथ पकाएँ। सर्व प्रकार के बवासीर दूर होती है।

९. ६ ग्राम इन्द्राजौ का चूर्ण ३ ग्राम को ६ ग्राम शहद के साथ चाटने से खूनी और बादी बवासीर दूर होती है।

१०. इन्द्रजौ का चूर्ण ३ ग्राम को ६ ग्राम शहद के साथ चाटने से खूनी बवासीर जड़ से नष्ट हो जाती है।

बवासीर के मस्से

१. अजवायन देसी, अजवायन जंगली, अजवायन खुरा–सानी, तीनों को समभाग लेकर सूक्ष्म पीसकर मक्खन में मिलाकर मस्सों पर लगाने से कुछ ही दिन में मस्से मुरझाकर स्वयं गिर जाते हैं।

२. नीम और पीपल के पत्ते घोट–पीसकर लेप करने से अर्श के मस्से नष्ट होते हैं।

३. हुलहुल के पत्ते ३० ग्राम पीसकर टिकिया बना लें। इस टिकिया को बवासीर के मस्सों पर रखकर ऊपर से लंगोट चढ़ा लें। ३ दिन ऐसा करने से मस्से दूर हो जाएँगे।

४. कुचला के बीज को मिट्टी के तेल में घिसकर मस्सों पर लेप करने से मस्से सूख जाएँगे।

५. हाथी–दाँत का चूरा अग्नि पर डालकर गुदा के मस्सों पर धूनी देने से मस्से सूख जाते हैं।

६. फिटकरी भुनी हुई पानी में घोलकर मस्सों पर लगाएँ।

७. आम के पत्तों का रस लगाना भी लाभदायक है।

८. दारचिकना २ ग्राम, नीलामोथा १ ग्राम–दोनों को बारीक पीसकर सुरक्षित रख लें। प्रातः शौच आदि से निवृत्त होकर २ ग्रेन दवा लगाएँ, फिर न लगाएँ। १० दिन में मस्से सूखकर गिर जाएँगें। पथ्य में तेल के पूड़े और गुलगुले खाने को दें।

नोट : दवा लगाकर उसी समय गुदा को न धोएँ, अन्यथा गुदा सूज जाएगी।

९. चीनिया कपूर १० ग्राम, सरसों का पकाया हुआ तेल ५० ग्राम। दोनों को मिलकार एक शीशी में भर दें और तीन दिन तक रक्खा करने दें। इस तेल को फुरेरी से मस्सों पर लगाएँ। १५ दिन तक प्रयोग करें। कैसे भी मस्से क्यों न हों नष्ट हो जाएंगे।

साभार शद्धि समाचार

श्री ओंकारेश्रवर ज्योतिर्लिंग

ऊँकारं बिन्दु संयुक्त नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ऊँकाराय नमो नमः।।

श्री ओंकारेश्रवर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश में रेवा (नर्मदा) के पावन तट पर मांधाता पर्वत पर विराजमान है। सूर्यवंशी महाराजा मांधाताने कडी तपस्या करके भगवान शिव को प्रसन्न किया था। भगवान शिव यहाँ प्रणव (ऊँकार) स्वरूप को बिराजमान है। यहाँ के पर्वत का आकार भी ऊँकार जैसा है। योगसाधना में प्रणव की उपासना का बड़ा ही माहात्म्य है। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक प्रचंड विस्फोट के साथ हुई, उस समय ऊँकारका नाद हुआ था। प्रणव के दर्शन एवँ नाद से ध्यान एवँ समाधि की प्राप्ति सुलभ होती है। मांडक्योपनिषद में साढ़े तीन मात्रा के इस महान ऊँकारका विशद दर्शन किया गया है। हमारे सभी मंत्रों का प्रारंभ ऊँकार से होता है। क्योंकि इसे स्वयं परमात्मा की संज्ञा मानी गई है। प्रणव के ध्यान से चित्त शुद्ध और शांत होता है। शांत चित्त से विवेक जाग्रत होता है एवँ सभी प्रकार की कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। चित्त शुद्धि से ही व्यवहारिक एवँ पारमार्थिक सम्पदा उपलब्ध होती है। आइए, प्रणव स्वरूप भगवान शिव का आराधन क़रें एवँ परम कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

डायबिटीज कन्ट्रोलर चिकित्सा सूत्र

१. पाँच या दस ग्राम मेथी दाना मोटा कूटकर डेढ़ कप पानी (गरम पानी) में काँच के गिलास में डालकर रखें। सायंकाल भिगोएँ। जल को दूसरे दिन प्रातः मसलकर खाली पेट पी लें। ३० मिनट तक कुछ न खाएँ। नायर अस्पताल मुम्बई में इस पर सफल अनुसंधान किया गया तो पाया कि मेथी दानों में एक विशेष तेल का अंश होता है जो वाटर सॉलिबुल है जोकि अग्नाशय (पैंक्रियाज) को एक्टिवेट करता है। यह प्रारम्भिक कफज मधुमेह नियंत्रण का रामबाण नुस्खा है–करके देखें। १ वर्ष नियमित लें।

२. एक सफल अनुभूत एवं परीक्षित अचूक नुस्खा यह है कि शरीफा फल के वृक्ष के २१ पत्तों को तोड़कर पानी से धोकर, दो गिलास पानी में काढ़े की तरह पकाएँ, जब एक बड़ा कप शेष बचे तो, छानकर ठंडा करके सुबह खाली पेट पीएँ। ऐसा लगातार ३ से ६ माह तक इस नुस्खे का प्रयोग करने से डायबिटीज नियंत्रण में आ जाती है।

३. नायर हॉस्पिटल मुम्बई में मधुमेह में लाभकारी एक प्रयोग और किया गया जिसमें प्याज के बारीक–बारीक टुकड़ों को सुखाकर बारीक चूर्ण तैयार करके, २–२ चम्मच चूर्ण खाली पेट सुबह–शाम दिया गया। एक घंटा तक कुछ न खाएँ। खाली पेट ट्रायल करें। अनुभूत नुस्खा है।

४. कलौंजी का तेल ५–५ बूँद, बताशे में डालकर सुबह–शाम सेवन करने से डायबिटीज निश्चय ही नियंत्रित हो जाती है। यह नुस्खा भी परिक्षित एवं अनुभूत है।

५. एक लाभकारी परीक्षित अनुभूत नुस्खा यह भी है कि ताजी बेलपत्र की पत्तियाँ ५, नीम की ताजी पत्तियाँ ११, जामुन की ताजी पत्तियाँ ५, तुलसा की पत्तियाँ २१ तथा ५ गुड़हल के लाल फूल (देसी गुड़हल) तथा सदाबहार की ११ पत्तियाँ,५ फूल–इन सबको मिलाकर चबा लें या फिर चटनी बनाकर सुबह खाली पेट सेवन करें। कम से कम ३ से ६ माह प्रयोग करें।

६. कच्ची हल्दी का स्वरस २ चम्मच, जामुन पत्तियों का स्वरस २ चम्मच, तुलसी पत्रों का स्वरस १ चम्मच, बेलपत्र का स्वरस १ चम्मच, अदरख स्वरस १ चम्मच, मेथी) चम्मच मिलाकर खाना खाने के बाद सुबह–शाम नियमित प्रयोग करें।

यद्यपि मधुमेह के ऐसे अनेक चिकित्सा सूत्र हैं जिनसे मधुमेह नियंत्रण में लाभ मिल सकता है, किन्तु आयुर्वेद शास्त्र मतानुसार–बसंतकुसुमाकर रस की एक गोली सुबह–शाम पीसकर शेष पृष्ठ 10 पर

हम जीवन के प्रति धन्यता का अनुभव करें

✍ ललित गर्ग

आज यह तय करना जरूरी है कि जीवन धन्यहै। हमारे स्वयं के प्रति जब धन्यता का भाव होगा तभी हम वास्तविक सफलताओं को सृजित कर सकेंगे। हम जो उद्देश्य लेकर घर से बाहर कदम रखते हैं उससे कभी विचलित नहीं होना चाहिए। डॉ. अब्दुल कलाम की जिसने जीवनी पढ़ी है तो उसमें उन्होंने लिखा है कि जो हम सोचते हैं वह अवश्य पूर्ण होता है। हर व्यक्ति की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपने जीवन में सफलता की उच्चतम ऊँचाईयों को छूना चाहता है। उसकी यह नैसर्गिक आकांक्षा होती है कि उसे मनचाही वस्तु मिले, मनचाहा पद मिले, मनचाहा जीवनसाथी मिले, मनचाहा मान–सम्मान प्राप्त हो, मनचाही गाड़ी, बंगला, कोठी, कार का सुख मिले इत्यादि। किन्तु ऐसा सौभाग्यशाली व्यक्ति कोई बिरला ही होता है जिसकी अधिकांश कामनाओं की पूर्ति संभव हो जाए। पर मेरी दृष्टि में वह व्यक्ति ज्यादा सौभाग्यशाली है जो इन सब चीजों के प्रति धन्यता का भाव लिए होता है। हमारी दृष्टि 'लेने' या 'भोगने' से ज्यादा देने या त्यागने में होनी चाहिए। बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा ने कहा भी है कि इस जीवन का प्रथम लक्ष्य है दूसरों की सहायता करना और यदि आप दूसरों की सहायता नहीं कर सकते तो कम से कम उन्हें आहत तो न करें।

'देने का सुख' सचमुच अद्भुत होता है। किसी के लिए कुछ करके जो संतोष मिलता है उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। फिर वह कड़कती ठंड में किसी गरीब को एक प्याली चाय देना ही क्यों न हो और इसके साथ मन में 'जो मिला बहुत मिला–शुक्रिया' के भाव हों तो जिन्दगी बड़े सुकून से जी जा सकती है, काटनी नहीं पड़ती। महान संत तुकाराम का मार्मिक कथन है कि यदि किसी को दूध नहीं दे सकते, तो मत दो। मगर छाछ देने में क्या हर्ज है? यदि किसी भूखे को अन्न देने में समर्थ नहीं हो तो कोई बात नहीं, पर प्यासे को पानी तो पिला सकते हो। देना और लेना हमारी साँस

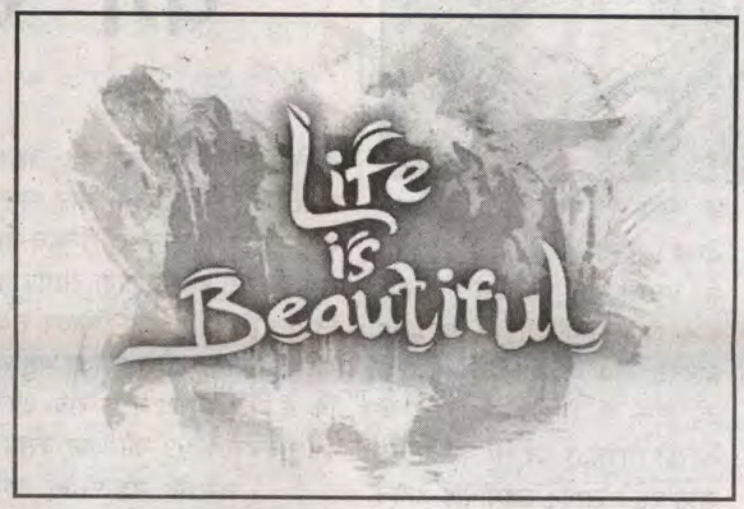

की लय की तरह स्वाभाविक होता है। अंदर और बाहर, बार–बार यही क्रम। दुनिया की सभी प्रमुख परम्पराओं में देना एक अभिन्न अवधारणा है। हिन्दू धर्म में दान, ईसाई धर्म में टाइदिंग, यहूदी धर्म में जदाबा, सिख धर्म में सेवा और इस्लाम में जकात। जैसा कि असीसी के संट फ्रांसिस ने कहा–"हम देने में ही प्राप्त करते हैं।" हम ब्रह्माण्ड को बताते हैं कि धन सिर्फ ऊर्जा है और हम सिर्फ उस ऊर्जाके माध्यम हैं। इसलिए हम उसे जितना छोड़ते हैं, उतना ही हमें मिलता है। संपत्ति बनाना इतना ही सरल है।

जब हम जीवन के प्रति धन्यता का अनुभव करते हैं तभी हमें जिन्दगी खुशनुमा लगती है। तब हम सौभाग्यशाली महसूस करते हैं जो मिला है उसमें। ये सब क्या कम है कि हमारे पास परिवार है, दोस्त है, स्वास्थ्य है, घर है, सकारात्मक सोच है, आत्मविश्वास है, पुरुषार्थ है, भगवान पर भरोसा है, ऊँचा लक्ष्य है। असल में जीवन में जो है उसके प्रति कृतज्ञता का भाव होना जरूरी है। इसीलिए जार्ज बरनार्ड शॉ ने कहा है कि कमाए बगैर धन का उपभोग करने की तरह ही खुशी दिए बगैर खुश रहने का अधिकार हमें नहीं है।

आखिर ,क्यों हम नकारात्मक सोच से घिरे रहते हैं। क्यों हर व्यक्ति को यही लगता है कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ? दुनिया के सारे दर्द मेरे लिए ही क्यों बने हैं? क्यों मैं ही अभावों में जीने को विवश हूँ? क्यों सारी असफलताएँ मेरे मार्ग में ही आती हैं? जबकि अगर सोचा जाए तो महत्त्वपूर्ण यह नहीं होता कि हमारे पास पीड़ाएँ, असफलताएँ, दर्द और निराशाएँ कितनी हैं, जरूरी यह होता है कि आप उस दर्द, पीड़ा, असफलता के साथ किस तरह खुश रह पाते हैं। इसलिए जो कुछ मिला है या जो कुछ बचा है, उसे गले लगाएँ बजाय असफलता या दर्द का गम मनाने के। असल में जीवन के प्रति कृतज्ञ होना जरूरी है। सभी धर्मों में कृतज्ञता का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कृतज्ञता धार्मिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करती है। सिसरो से लेकर बुद्ध तक और अन्य कई दार्शनिक व आध्यात्मिक गुरुओं ने भी कृतज्ञता को भरपूर बाँटा है और उससे प्राप्त खुशी को उत्स की तरह मनाया है। दुनिया के सभी बड़े धर्म–हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध मानते हैं कि किसी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना एक भावनात्मक रवैया है और अंत में इसका अच्छा प्रतिफल प्राप्त होता है। बड़े–बड़े पादरी और पंडितों ने इस विषय को लेकर बहुत–सा ज्ञान बाँटा है, लेकिन आज तक इन विद्वानों ने इसे विज्ञान का रूप नहीं दिया है। वाल्मीकि ने रामायण में भी इस बात का उल्लेख किया है कि परमात्मा ने जो कुछ तुमको दिया है, उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करो। हालात्रिक इसका विज्ञान बस छोटे से वाक्य में समाहित है कि जितना आप देंगे, उससे कहीं अधिक यह आपके पास लौटकर आएगा, लेकिन इसे समझ पाना हर किसी के वश की बात नहीं है। 'कितना दें और क्यों?' इस बात में बिल क्लिंटन ने देने का गणित बखूबी समझाया है। जैसा कि श्री श्री रविशंकर ने कहा है–"मानव जीवन एक महान और दुर्लभ उपहार है और इस धरती के सभी लोगों को अपने जीवन के द्वारा अपनी मानवीयता की पूर्ण क्षमता प्रदर्शित करने का मौका मिलना चाहिए।" हम इस महत्त्वपूर्ण कार्य को तभी पूरा कर सकते हैं, यदि हम दूसरों की मदद करें। दूसरों की मदद करते हुए वास्तव में हम अपनी ही मदद करते हैं। किसी ने बहुत ठीक कहा है–"मैं एक दोस्त ढूँढने गया, लेकिन वहाँ किसी को नहीं पाया। मैं दोस्त बनने गया और पाया कि वहाँ कई दोस्त थे।"

जीवन में कई ऐसी घटनाएँ होती हैं जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता। हालाँकि हमारे पास विकल्प जरूर होता है। हम समय और घटनाओं को सहते हुए आगे बढ़ते रहें या फिर हार मान जायें।

सफलता का दूसरा सूत्र है–पुरुषार्थ। भाग्य और पुरुषार्थ जिंदगी के दो छोर हैं जिसका एक छोर वर्तमान में है तो दूसरा अतीत में। भाग्य के कोष में संचित कर्मों की विपुल पूँजी है, संस्कारों की अकूत राशि है, प्रवृत्तियों एवं प्रारब्ध का अतुलनीय भंडार है जबकि पुरुषार्थ के पास अपना कहने के लिए केवल एक पल है जो अभी अपना होते हुए भी अगले ही पल भाग्य के कोष में जा गिरेगा। भाग्य के व्यापक आकार को देखकर सामान्य जन की क्या कहें, कभी–कभी तो, विशेषज्ञ और वरिष्ठजन भी भाग्य के बलशाली होने की गवाही देने लगते हैं। बुद्धि के जिस तरह छोटे से दिखने वाले सूर्यमंडल के उदय होते ही तीनों लोकों का अंधेरा भाग जाता है ठीक उसी प्रकार पुरुषार्थ का एक पल भी कई जन्मों के भाग्य पर भारी पड़ता है। वस्तुतः भाग्य भी तो विगत में किए गये शेष पृष्ठ 11 पर

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा को प्राप्त दान सूची मास मई २०१८

1.	मायावन्ती जी की 27वीं पुण्य तिथि पर दान	100/-
2.	वैद्य सुरेश चन्द्र गर्ग दवाखाना हकीम मुकट लाल, चौक बाजार, बुलन्दशहर, (63वीं वर्ष गाँठ पर दान)	250/-
3.	डॉ० अमोल गर्ग, बुलन्दशहर (पापा जी के 64वें जन्म दिवस पर दान)	150/-
4.	लेडी डॉ० शानू गर्ग, बुलन्दशहर (पिताजी की साल गिरह पर दान)	100/-
5.	संदीप भूटानी, बुलन्दशहर (कैलेण्डर देने पर सहयोग)	100/-
6.	नाथूराम गोड़से जयंती पर गुप्त दान	100/-
7.	श्री मती मंजू शर्मा द्वारा, अपने पति 72 वर्षीय स्वर्गीय रमेश चन्द शर्मा (शिब्बू) की तेरहवीं पर दान)	500/-
8.	ब्रहमानन्द (खानपुर वाले) कृष्णानगर, डा खन्ना के सामने, बुलन्दशहर (नाथूराम गोडसे जयन्ती (19 मई) पर दान	250/-
9.	निर्मल टैक्स टाइल्स, बुलन्दशहर (कैलेन्डर देने पर सहयोग)	150/-
10.	चेतन आनन्द, कृष्णा नगर, बुलन्दशहर (सावरकर जयन्ती पर दान)	100/-
11.	आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर (बीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े हिन्दू संगठक स्वातन्त्र्य वीर सावरकर की 135वीं जयन्ती पर दान)	250/-
12.	गुरु गोलवलकर की पुण्य स्मरण तिथि पर गुप्तदान	1/-
13.	खालसा ऑटोमोबाइल्स, राजे बाबू रोड़, बुलन्दशहर (दान)	100/-
	टोटल	2151/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस पर

खूब लड़ी मर्दानी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

ज्योति खरे

भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थीं। सच्चा वीर कभी आपत्तियों से नहीं घबराता है। प्रलोभन उसे कर्तव्य पालन से विमुख नहीं कर सकते। उसका लक्ष्य उदार और उच्च होता है। उसका चरित्र अनुकरणीय होता है। अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह सदैव आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी और धर्मनिष्ठ होता है। ऐसी ही थीं वीरांगना लक्ष्मीबाई। महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में १६ नवंबर १८३५ को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी। लक्ष्मीबाई अपने बाल्यकाल में मनुबाई के नाम से जानी जाती थीं।

इधर सन् १८३८ में गंगाधर राव को झांसी का राजा घोषित किया गया। वे विधुर थे। सन् १८५० में मनुबाई से उनका विवाह हुआ। सन् १८५१ में उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। झांसी के कोने-कोने में आनंद की लहर प्रवाहित हुई, लेकिन चार माह पश्चात उस बालक का निधन हो गया। सारी झांसी शोक सागर में निमग्न हो गई। राजा गंगाधर राव को तो इतना गहरा धक्का पहुंचा कि वे फिर स्वस्थ न हो सके और २१ नवंबर १८५३ को चल बसे।

यद्यपि महाराजा का निधन महारानी के लिए असहनीय था, लेकिन फिर भी वे घबराई नहीं, उन्होंने विवेक नहीं खोया। राजा गंगाधर राव ने अपने जीवनकाल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मानकर अंगरेजी सरकार को सूचना दे दी थी। परंतु ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया।

२७ फरवरी १८५४ को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दत्तकपुत्र दामोदर राव की गोद अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंगरेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। पोलेटिकल एजेंट की सूचना पाते ही रानी के मुख से यह वाक्य प्रस्फुटित हो गया, **मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।** ७ मार्च १८५४ को झांसी पर अंगरेजों का अधिकार हुआ। झांसी की रानी ने पेंशन अस्वीकृत कर दी व नगर के राजमहल में निवास करने लगीं।

यहीं से भारत की प्रथम स्वाधीनता क्रांति का बीज प्रस्फुटित हुआ। अंगरेजों की राज्य लिप्सा की नीति से उत्तरी भारत के नवाब और राजे-महाराजे असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भभक उठी। रानी लक्ष्मीबाई ने इसको स्वर्णावसर माना और क्रांति की ज्वालाओं को अधिक सुलगाया तथा अंगरेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई।

नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल, अंतिम मुगल सम्राट की बेगम जीनत महल, स्वयं मुगल सम्राट बहादुर शाह, नाना साहब के वकील अजीमुल्ला शाहगढ़ के राजा, वानपुर के राजा मर्दनसिंह और तात्या टोपे आदि सभी महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे।

भारत की जनता में विद्रोह की ज्वाला भभक गई। समस्त देश में सुसंगठित और सु. ढ रूप से क्रांति को कार्यान्वित करने की तिथि ३१ मई १८५७ निश्चित की गई, लेकिन इससे पूर्व ही क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित हो गई और ७ मई १८५७ को मेरठ में तथा ४ जून १८५७ को कानपुर में, भीषण विप्लव हो गए। कानपुर तो २८ जून १८५७ को पूर्ण स्वतंत्र हो गया। अंगरेजों के कमांडर सर ह्यूरोज ने अपनी सेना को सुसंगठित कर विद्रोह दबाने का प्रयत्न किया।

उन्होंने सागर, गढ़कोटा, शाहगढ़, मदनपुर, मडखेड़ा, वानपुर और तालबेहट पर अधिकार कियाऔर नृशंसतापूर्ण अत्याचार किए। फिर झांसी की ओर अपना कदम बढ़ाया और अपना मोर्चा कैमासन पहाड़ी के मैदान में पूर्व और दक्षिण के मध्य लगा लिया। लक्ष्मीबाई पहले से ही सतर्क थीं और वानपुर के राजा मर्दनसिंह से भी इस युद्ध की सूचना तथा उनके आगमन की सूचना प्राप्त हो चुकी थी। २३ मार्च १८५८ को झांसी का ऐतिहासिक युद्ध आरंभ हुआ। कुशल तोपची गुलाम गौस खां ने झांसी की रानी के आदेशानुसार तोपों के लक्ष्य साधकर ऐसे गोले फेंके कि पहली बार में ही अंगरेजी सेना के छक्के छूट गए।

रानी लक्ष्मीबाई ने सात दिन तक वीरतापूर्वक झांसी की सुरक्षा की और अपनी छोटी-सी सशस्त्र सेना से अंगरेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। रानी ने खुलेरूप से शत्रु का सामना किया और युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया। वे अकेले ही अपनी पीठ के पीछे दामोदर राव को कसकर घोड़े पर सवार हो, अंगरेजों से युद्ध करती रहीं। बहुत दिन तक युद्ध का क्रम इस प्रकार चलना असंभव था। सरदारों का आग्रह मानकर रानी ने कालपी प्रस्थान किया। वहां जाकर वे शांत नहीं बैठीं। उन्होंने नाना साहब और उनके योग्य सेनापति तात्या टोपे से संपर्क स्थापित किया और विचार-विमर्श किया। रानी की वीरता और साहस का लोहा अंगरेज मान गए, लेकिन उन्होंने रानी का पीछा किया। रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ, लेकिन रानी ने साहस नहीं छोड़ा और शेष पृष्ठ 10 पर

राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिये जम्मू बचाओ कश्मीर बचाओ

जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले के रसाना गाँव के एक मंदिर में विशेष षडयंत्र के अंतर्गत १७ जनवरी को एक नाबालिग ८ वर्षीय बालिका के शव को पाया जाना बताया है। इसी आधार पर वहां के प्रशासन ने कुछ राष्ट्रवादियों पर दोषारोपण करके उनको बंदी बनाया हैं। इस गांव के अतिरिक्त कठुआ जिले की अधिकांश जनता इस प्रकार के तथाकथित मनगढंत व झूठ पर आधारित विवाद के कारण आक्रोशित वं पीड़ित हो रही हैं। कुछ सूत्रों से यह भी ज्ञात हुआ है कि इस गांव के कुछ राष्ट्रवादी परिवार भयभीत होकर वहां से पलायन करने को भी विवश हो गये हैं। कठुआ के देशभक्त लोगों ने इस हत्याकांड की निष्पक्षता व सत्यता के लिये देश की सर्वोच्च जाँच एजेंसी सीबीआई से जांच करवाने की राज्य सरकार से मांग करी हैं। उन्होंने अपनी मांग मनवाने के लिये एक आंदोलन भी चला रखा हैं।

इस तथाकथित आरोपों के पीछे कही न कही एक ऐसे षडयंत्र की साजिश समझ में आती है जिससे वहां पर म्यांमार से अवैध रूप से घुसपैठ करके आने वाले रोहिंग्या मुसलमानों का विरोध न हो पाये? क्योंकि जम्मू का क्षेत्र हिन्दू बहुल हैं इसलिये षडयंत्रकारियों द्वारा यहां पर बांग्लादेशी घुसपैठियों को बसाने के अतिरिक्त पिछले लगभग ६-७ वर्षो से धीरे-धीरे रोहिंग्या मुसलमानों को भी बसाया जा रहा हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जम्मू क्षेत्र की जनसंख्या के स्वरूप को परिवर्तित किये जाने की सुनियोजित योजना पर कार्य हो रहा है। इन घुसपैठियों के कारण वहां अनेक प्रकार के आपराधिक व आतंकी घटनाओं में वृद्धि हो रही है। इसीलिये जम्मू व कठुआ आदि की राष्ट्रवादी जनता ने इन रोहिंग्याओं को उनके क्षेत्रों से बाहर निकालने के लिये शासन पर दबाव बनाया हुआ है। अनेक आंदोलनों के उपरांत भी राज्य सरकार कोई सुनवायी नही कर रही है। इसलिये ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस क्षेत्र की जनता को पीड़ित करके रोहिंग्याओं को वहां सरलता से बसाने की योजना पर वहां का प्रशासन कार्य कर रहा है।

अतः राज्य सरकार की ऐसी योजनाओं के प्रति समस्त देशवासियों को जम्मू क्षेत्र की जनता के पक्ष को समझना होगा और कठुआ कांड की सीबीआई जांच की मांग के लिये देश्वयापी आंदोलन करने होंगे। आज सम्पूर्ण देशवासियों को अपनी लगभग ३० वर्ष पूर्व की गयी भयंकर भूल जिसमें ५ लाख कश्मीरी हिन्दू कश्मीर से मार-मार कर खदेड़े गये थे, की पुनःवर्ती से बचना होगा। परंतु यह भी स्मरण रहें कि कुछ वर्ष पूर्व जब हमारी अमरनाथ जी की धार्मिक यात्रा पर संकट आ रहा था तब भी जम्मू के लोगों द्वारा चलाये गये आन्दोलन को देश के अनेक भागों से भरपूर समर्थन मिला था और उस अभियान में सफल हुए थे। इसलिए जम्मू के निवासियों की रक्षार्थ हम सबको उनके इस आंदोलन में पुनः सहभागी बनना होगा। जम्मू-कश्मीर एक सीमांत प्रदेश है अतः राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिये यह हम सब का कर्तव्य भी हैं और दायित्व भी बनता हैं कि ऐसे षडयंत्रकारियों का एकजुट होकर प्रभावशाली प्रतिरोध करें।

कश्मीर में रमजान पर युद्ध-विराम

विनोद कुमार सर्वोदय

जिस कश्मीर में भारत काफिर है के नारे लगाए जाते हो वहां युद्ध–विराम का क्या औचित्य है अनेक आपत्तियों के उपरांत भी केंद्रीय सरकार ने जम्मू–कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की मांग को मानते हुए रमजान माह (अवधि लगभग ३० दिन) में सेना को आतंकियों के विरोध में अपनी ओर से आगे बढ़ कर कोई कार्यवाही नहीं करने का निर्णय किया है। परंतु अगर आतंकवादी गोलाबारी या अन्य आतंकी गतिविधियों को जारी रखेंगे तो उस समय उसका प्रतिरोध करने को सुरक्षाबलों को छूट होगी। फिर भी यह क्यों नही सोचा गया कि जब केंद्र सरकार की कठोर नीतियों के कारण आतंकवाद पर अंकुश लगाने में सफलता मिल रही है और पिछले एक–दो वर्षो में सैकड़ों आतंकियों को मारा भी जा चुका है तो क्या ऐसे में युद्ध विराम राष्ट्रीय हित में होगा? क्या इस निर्णय के पीछे सुरक्षा बलों के सफल अभियान से आतंकियों को सुरक्षित करने का कोई षडयंत्र तो नही है? यद्यपि वर्षो से यह स्पष्ट है कि जब भी रमजान के अवसर पर या अन्य किसी अवसर पर कश्मीर में आतंकियों के प्रति युद्धविराम किया गया तो जिहादियों ने इस छूट का अनुचित लाभ लेते हुए अपने बिखरे हुए व कमजोर पड़ गए आतंकी साथियों को पुनः संगठित किया और सबको शस्त्रों से भी सुज्जित करके सुरक्षा प्रतिष्ठानों व निर्दोष नागरिकों पर भी आक्रमण किये थे। जिसके परिणामस्वरूप ऐसे युद्धविरामों की अवधि में हमारे सैकड़ों सुरक्षाबलों के सैनिकों व सामान्य नागरिकों को भी उन आतंकियों का शिकार बनना पड़ा था। क्या ऐसे अवसरों पर जिहादियों के आक्रमणों से लहूलुहान हुए सैनिकों और नागरिकों के परिवारों की पीड़ाओं के घावों को हरा होने दें?

अतः कभी–कभी ऐसा प्रतीत होता है कि जम्मू–कश्मीर में जो भी सरकार बनती है वह कभी रमजान के बहाने युद्ध–विराम करवाके, तो कभी हीलिंग–टच द्वारा और कभी मानवाधिकार की दुहाई देकर सुरक्षाबलों को हतोत्साहित करके जाने–अनजाने आतंक वादियों को ही प्रोत्साहित करती है। जिससे सदैव राष्ट्रीय हित प्रभावित होते रहे हैं। परंतु रमजान में युद्ध विराम के निर्णय से यह स्पष्ट होता है कि आतंकवादी एक विशेष धर्म से संबंधित होते हैं और उनका धर्म भी होता है। क्योंकि अब आप भली प्रकार समझ सकते हैं कि रमजान का महीना जो केवल इस्लाम के अनुयायियों के लिए पवित्र होता है और जिनको सुरक्षा प्रदान करने के लिए युद्धविराम घोषित हुआ है, वे कौन है? वे सब मुसलमान है और इस्लाम मजहब धर्म के मानने वाले है। अतः इससे यह भी स्पष्ट हुआ है कि आतंकवाद का भी धर्म है और वह है इस्लाम।

क्या केंद्र सरकार पर कश्मीर की मुख्य मंत्री महबूबा मुफ्ती का ऐसा कोई दबाव है जो राष्ट्र की सुरक्षा को चुनौती देने वाली युद्धविराम की अनुचित मांग को मानने के लिए विवश होना पड़ा? क्या यह आत्मघाती कूटनीतिज्ञता नही है? क्या यह अदूरदर्शी निर्णय कश्मीरी कट्टरपंथियों, अलगाव वादियों व आतंकवादियों के आगे घुटने टेकने का संकेत तो नही है? क्या इससे पाक व पाक परस्त शत्रुओं को प्रोत्साहन नही मिलेगा? समाचारों से यह भी ज्ञात हुआ है कि केंद्र सरकार ने यह निर्णय इसलिये भी लिया है कि कश्मीर के शांति प्रिय व अमन पसंद मुसलमान अपने धार्मिक रमजान के महीने को शांतिपूर्वक मना सकें। परंतु जब १९८९ से हिंदुओं की हत्याओं व आगजनी का नंगा नाच आरम्भ हुआ और हिंदुओं को वहां से भागने को विवश होना पड़ रहा था तब ये अमन पसंद मुसलमान क्यों मौन थे? हिंदुओं को घाटी छोड़ देने की चेतावनी के साथ साथ इस्लाम हमारा मकसद है कुरान हमारा दस्तूर है जिहाद हमारा रास्ता है आदि नारे लिखे पोस्टर पूरी घाटी में लगाये गये। यही नही कश्मीर में अगर रहना है, अल्लाहो अकबर कहना होगा के नारे लगाये जाने लगे जिससे वहां का हिन्दू समाज भय से कांप उठा था। इन अमानवीय अत्याचारों का घटनाक्रम २८ वर्ष पूर्व सन १९९० में लाखों कश्मीरी हिंदुओं को वहां से मार मार कर उनकी बहन–बेटियों व संम्पतियों को लूट कर भगाये जाने तक जारी रहा, तब ये शान्ति प्रिय कश्मीरी मुसलमान कहां थे? उस संकटकालीन स्थितियों को आज स्मरण करने से भी सामान्य ह्रदय कांपनें लगता है। इस पर भी कश्मीरी मुसलमानों को शांतिप्रिय समझना क्या उचित होगा? क्या इन शांति प्रिय मुसलमानों ने कभी जिहाद के दुष्परिणामों से रक्तरंजित हो रही मानवता की रक्षार्थ कोई सकारात्मक कर्तव्य निभाया है? एक विडंबना यह भी है कि इन अमन पसंद लोगों के होते कश्मीर में अनेक धार्मिक स्थलों को आतंकवादी समय–समय पर अपनी शरण स्थली भी बना लेते है। वहां पाकिस्तान जिन्दाबाद व भारतीय कुत्तो वापस जाओं के नारे तो आम बात है साथ ही पाकिस्तानी व इस्लामिक स्टेट के झण्डे लहराए जाना भी देशद्रोही गतिविधियों का बडा स्पष्ट संकेत हैं। आतंकवादियों के सहयोगी हजारों पत्थरबाजों को क्षमा करने से क्या उनके अंधविश्वासों और विश्वासों से बनी जिहादी विचारधारा को नियंत्रित किया जा सकता है? मुस्लिम युवकों की ब्रेनवाशिंग करने वाले मुल्ला–मौलवियों व उम्मा पर कोई अंकुश न होने के कारण जिहादी विचारधारा का विस्तार थम नही पा रहा है। इस विशेष विचारधारा के कारण ही जम्मू–कश्मीर राज्य में पिछले ७० वर्षों में अरबों–खरबों रुपयों की केंद्रीय सहायता के उपरांत भी वहां के बहुसंख्यक मुस्लिम कट्टरपंथियों में भारत के प्रति श्रद्धा का कोई भाव ही नही बन सका? इतिहास साक्षी है कि मानवता का संदेश देने वाला हिन्दू धर्म सदियों से इस्लामिक आक्रांताओं को झेल रहा है। परंतु जब भी और वर्तमान में भी जिहाद के लिए विभिन्न मुस्लिम संप्रदायों व अन्य समुदाय के मध्य होने वाले अनेक संघर्ष इस बात के साक्षी है कि रमजान में कभी भी कहीं भी काफिरों व अविश्वासियों के विरुद्ध युद्ध विराम नही किया गया। बल्कि इन मजहबी आतंकियों में अविश्वासियों के धार्मिक त्योहारों पर व स्थलों को अपनी जिहादी मानसिकता का शिकार बनाने में सदैव प्राथमिकता रही थी और अभी भी है।

क्या ऐसे में युद्धविराम करके आतंकवाद पर अंकुश लगाया जा सकता है? ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आतंकवाद पर कठोर निर्णय लेने वाली मोदी सरकार अभी इस्लामिक आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए अपनी इच्छा शक्ति की दृढ़ता का परिचय कराना नही चाहती। जबकि शत्रुओं को हर परिस्थितियों में दण्डित करके कुचलना ही राष्ट्रीय हित में होता है। इस प्रकार राष्ट्रीय हितों को तिलांजलि देने से क्या ऐसा सोचा जा सकता है कि भविष्य में स्वस्थ रणनीति बनाने में हमारे रणनीतिकार भ्रमित तो नही किये जा रहे हैं? अतः वर्तमान विपरीत परिस्थितियों में युद्धविराम का निर्णय राजनीति के हितार्थ भी अनावश्यक व दुःखद है। राजनैतिक कारणों से लिये गये ऐसे शासकीय निर्णयों से ही हिंदुओं में तेजस्विता धीरे धीरे नष्ट हो रही है और उनको निष्क्रिय किया जा रहा है। जिससे वे अपने शत्रु की शत्रुता को समझते हुए भी बार– बार कबूतर के समान आंखें बंद करने को विवश होते जा रहे हैं। जबकि बिल्ली रूपी जिहादी तो अपना काम कर ही रहे हैं। इसलिये नेताओं के साथ साथ अब सोचना तो हम सबको भी होगा कि आतंकियों का भी धर्म होता है तो उनसे कैसे सुरक्षित रहें?

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और डॉक्टर हेडगेवार

(२१ जून २०१८) पुण्यतिथि पर विशेष

डॉक्टर हेडगेवार जन्मजात देशभक्त थे। उन्होंने सशस्त्र क्रान्तिकारी के रूप में स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी सहभागिता प्रारम्भ की। बाद में कांग्रेस कार्यकर्ता और उसके बाद हिन्दू महासभा के कार्यकर्ता के रूप में स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रहे। १८८६ में जन्मे डॉक्टर साहब ने १६०५ में १६ वर्ष की आयु में अपना मित्र मंडल बनाया था जो राष्ट्रीय समाचार पत्रों का सामूहिक वाचन करता थां इसी वर्ष उन्होंने अपने मार्गदर्शक धर्मवीर डॉक्टर बालकृष्ण शिवराम मुंजे से बम बनाने की विधि सीख ली थी। १६०८ में मध्य प्रदेश के रामपायली पुलिस स्टेशन के पास बम फटने के कारण उनसे पूछताछ की गई थी। गुप्तचरों द्वारा की गई पूछताछ उनके जीवन के आखिरी समय तक जारी थी। कोई छात्र अगर किसी सभा में या प्रभात फेरी आदि में भाग लेता है तो उसका नाम शालाओं को शासन को सूचित करना होगा ऐसा एक परिपत्र सरकार ने जारी किया था। डॉक्टर साहब ने इस सर्कुलर का विरोध किया था। शाला में जब निरीक्षण के लिए पर्यवेक्षक गए तो उन्होंने 'वन्दे मातरम्' के उद्‌घोष के साथ उनका स्वागत किया। परिणामस्वरूप उन्हें नागपुर के नील सिटी हाईस्कूल से निष्कासित किया गया।

१६१० में शालांत परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद डॉक्टर मुंजे ने उन्हें कोलकाता के नेशनल मेडिकल कॉलेज में अध्ययन हेतु भेजा। जिस प्रकार वीर सावरकर घोषित रूप से बैरिस्टर बनने के लिए लंदन गए थे लेकिन उनका वास्तविक उद्देश्य अंग्रेजों की राजधानी में जाकर ब्रिटिशों को ललकारना था, ठीक उसी प्रकार डॉक्टर साहब मेडिकल कॉलेज में पढ़ने गए थे लेकिन वह सशस्त्र क्रांतिकारी के रूप में कोलकाता में काम करने लगे। वह क्रांतिकारियों की प्रख्यात संस्था अनुशीलन समिति के सदस्य बने। अनुशीलन समिति में वह 'कोकेन' नाम से जाने जाते थे। ३० दिसम्बर १६११ से ८ जनवरी १६१२ तक जॉर्ज पंचम का कोलकाता में प्रवास था। इस अवधि में डॉक्टर साहब को बंदी बनाया गया था। दिसम्बर १६१३ में माह के आखिरी समय में लॉर्ड हाडीज की कोलकाता यात्रा के समय भी उन्हें लाल बाजार पुलिस चौकी में बंदी बनाकर रखा गया था।

पुणे जाकर उन्होंने लोकमान्य तिलक जी से १६१६ में भेंट की थी। १६१६ से १६१६ तक उन्होंने बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारियों से संपर्क करके कुछ योजना बनाई। श्री गंगा प्रसाद पांडे के नेतृत्व में उन्होंने नागपुर और वर्धा के २० लोगों को क्रान्ति कार्य हेतु उत्तर भारत में भेजा। इस अवधि में वह स्वयं प्रगट रूप से तिलक जी द्वारा स्थापित होम रूल लीग का काम करते रहे। १६२० में लोकमान्य तिलक जी की अध्यक्षता में नागपुर में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के लिए डॉक्टर साहब ने प्रचार दौरा किया। दिनांक ११ अगस्त १६२० से १८ अगस्त १६२० तक असहकार आंदोलन कैसे चलाना यह नागपुर के नागरिकों को बताने के लिए बनाए गए 'नॉन कोऑपरेशन बोर्ड' के वह सचिव बनाए गए थे। नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के लिए बनाए गए स्वयं सेवक दल के वह 'ऑफिसर कमांडिंग' थे।

उल्लेखनीय है कि डॉक्टर हेडगेवार के नागपुर नेशनल यूनियन द्वारा नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के लिए भेजे गए प्रस्ताव 'हिंदुस्तान का प्रजासत्ता बनाकर विश्व के देशों को पूँजीवादी देशों के चंगुल से मुक्त कराना कांग्रेस का ध्येय है' अधिवेशन की विषय नियामक समिति द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। आगे जब कांग्रेस ने 'स्वतंत्रता' यह अपना ध्येय घोषित किया तो उन्होंने सभी संघ शाखाओं को आदेश दिया कि दिनांक २६ जनवरी १६३० को सायं ६ बजे शाखाओं में कार्यक्रम आयोजित कर 'स्वतंत्रता' यह अपना ध्येय घोषित करने के लिए कांग्रेस का अभिनन्दन करे।

जनवरी १६२१ में कांग्रेस के असहकार आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। दो महीनों तक अंग्रेज सरकार के विरुद्ध उग्र भाषण देते रहे। २ फरवरी १६२१ को कलेक्टर द्वारा डॉक्टर हेडगेवार के सार्वजनिक भाषण देने पर एक महीने के लिए प्रतिबन्ध लगाया गया। आदेश का उल्लंघन करके वह सार्वजनिक रूप से उग्र भाषण देते ही रहे। कारण बताओ नोटिस मिलने पर उन्होंने उत्तर दिया। उग्र भाषणों से अधिक नोटिस का उत्तर उग्र है ऐसा कहते हुए कोर्ट ने उन्हें १६ अगस्त १६२१ को एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई। उन्होंने मुस्कुराकर इस सजा का स्वागत किया। १२ जुलाई १६२२ को वह जेल से रिहा किये गये। नागपुर के व्यंकटेश सभागृह में कांग्रेस के एक बड़े नेता, जो बाद में विदर्भ एवं मध्य प्रान्त के मुख्यमंत्री बनाए गए थे, डॉक्टर नाभा खरे की अध्यक्षता में डॉक्टर हेडगेवार की स्वागत सभा आयोजित की गई थी। इस सभा को हाकिम अजमल खान तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सम्बोधित किया था।

अगस्त १६२२ में डॉक्टर हेडगेवार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के संयुक्त सचिव बनाए गए थे। इस अवधि में उन्होंने कांग्रेस के अंतर्गत एक स्वयंसेवक दल बनाने का प्रयास किया लेकिन इसमें वह असफल रहे। दिसम्बर १६२८ में मध्य प्रान्त कांग्रेस कमेटी के सदस्य के रूप में कोलकाता में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया। इस अवसर पर कांग्रेस स्वयंसेवक दल के ऑफिसर कमांडिंग नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से भेंट तथा प्रदीर्घ चर्चा की। साथ में वीर सावरकर के बड़े भाई क्रांतिवीर बाबाराव सावरकर थे। १६२६ के प्रारम्भ में भूमिगत अवस्था में नागपुर पधारे प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शिवराम हरि राजगुरु की व्यवस्था करने में डॉक्टर साहब की प्रमुख भूमिका रही।

२१ जुलाई १६३० को उन्होंने यवतमाल से ६ किलोमीटर दूर धामणगाँव मार्ग पर स्थित लोहारा जंगल में जंगल सत्याग्रह किया। डॉक्टर हेडगेवार के साथ लगभग चार हजार का जनसमुदाय था। धारा १६८ के अंतर्गत ६ माह की तथा धारा ३७६ के अंतर्गत ३ माह की, ऐसे कुल ६ माह के सश्रम कारावास की उन्हें सजा सुनाई गई। उन्हें अकोला जेल में रखा गया था।

साभार-शिशु मन्दिर सन्देश

सपना सच होगा

परिवर्तन अमूल-चूल उ. प्र. में होगा।
उत्तर उत्तम प्रदेश सपना सच होगा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
छेड़छाड़ के कारण हुए भयानक दंगे।
नहीं बचेगे छेड़छाड़ के दोषी नंगे।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
पुलिस सजग होगी कल से, अनुशासित भैया।
काट नहीं पाएगा अब कोई भी गैया।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
समयबद्ध अनुशासित सब कार्यालय होंगे।
नियत समय पर अफसर सभी उपस्थित होंगे।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
गुटका, पान, तम्बाकू कार्यालय में खाकर।
अपनी सूरत नहीं दिखाए कोई आकर।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
अधिकारों का अतिक्रमण भी करे ना कोई।
जागे अफसर नेता की मानवता सोई।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
लूट, अपहरण मुक्त बनेगा भारत अपना।
पूरा होगा यह मोदी-योगी का सपना।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
या तो सब अपने ही आप सुधर जाएँगे।
वर्ना दुष्टों के भी कतरे पर जाएगे।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
अब अपने अपनों को रेवड़ी नहीं बँटेगी।
दुष्कर्मी की उमर जेल के बीच कटेगी।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
गोदामों में अन्ना सड़ा तो जिम्मेदार नपेगा।
भूखा नहीं मरेगा कोई, ना अभाव पनपेगा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
शिक्षा और चिकित्सा का स्तर सुधरेगा।
बच्चो बचपन अब व्यर्थ नहीं बिखरेगा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
मदिरा पीकर सड़क बीच हंगामा करना।
भारी पड़ सकता है, झगड़ा -दंगा करना।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
निर्बल काश्तकार को ऋण से मुक्ति मिलेगी।
खेती में अब सुविधाओं की युक्ति मिलेगी।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
असहनीय कर बोझ नहीं जनता पर।
ध्यान रहेगा शासन का सुविधा समता पर।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
न्याय सुलभ सस्ता हो इसका ध्यान रहेगा।
प्रतिभाओं का भी पूरा सम्मान रहेगा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
चाटुकारिता नहीं कहीं भी रहेगी हावी।
पूज्य योग्यता रहेगी मित्र अवश्यम्भावी।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
यात्रा में भी रहेगी पूर्ण सुरक्षा सुविधा।
मिट जाएगी आतंकी हमलों की दुविधा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
पन्द्रह दिन में गुण्डा मुक्त प्रदेश बनेगा।
गड्ढा मुक्त सड़क भी होगी कमल खिलेगा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
जैसा तुमने सोचा है, वैसा ही होगा।
अब ना होगा घोटाला जो कल तक भोगा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
संसद और विधानसभा में भ्रष्ट ना होंगे।
भ्रष्टाचार नहीं होगा तो कष्ट ना होंगे।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
भारत हिन्दी, हिन्दु, हिन्दुस्तान बनेगा।
सकल विश्व में यह अपनी पहचान बनेगा।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
धीरत रखे सबका मनचाहा होना है।
शर्त यही है तुमको धैर्य नहीं खोना है।
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

हितेश कुमार शर्मा

माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय आत्मा

✍ विजयदत्त श्रीधर

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में अनेक महापुरुषों ने राष्ट्रीय परिदृश्य पर अपने बहुआयामी व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व की छाप छोड़ी है। ऐसे महापुरुषों में दादा माखनलाल चतुर्वेदी का नाम बड़े आदरपूर्वक लिया जाता है। वे सुधी चिंतक, सुकवि और प्रखर पत्रकार होने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम के सेनापतियों में से एक थे और सच्चे अर्थों में सम्पूर्ण मानव थे। उनकी मुकम्मल पहचान 'एक भारतीय आत्मा' के रूप में है, जो सर्वथा सटीक भी है।

माखनलाल चतुर्वेदी को भली–भाँति जानने–पहचानने के लिए तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्य और घटनाचक्र को जानना भी जरूरी है। यह वो समय था जब भारतीय जनमानस में आजाद होने की तमन्ना गहरे तक पैठ चुकी थी। लोकमान्य तिलक का उद्घोष–'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' जनमानस का प्रेरणास्त्रोत बन चुका था। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के अमोघ अस्त्र का सफल प्रयोग कर कर्मवीर मोहनदास करमचन्द गाँधी का राष्ट्रीय परिदृश्य के केंद्र में आगमन हो चुका था।

आर्थिक स्वतंत्रता के लिए स्वदेशी का मार्ग चुना गया था, सामाजिक सुधार के अभियान गतिशील थे और राजनीतिक चेतना स्वतंत्रता की चाह के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता बन गई थी। भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता इस सबको प्रखर अभिव्यक्ति प्रदान कर रही थी। इसी परिवेश में राष्ट्रीय क्षितिज पर माखनलाल चतुर्वेदी रूपी ज्वल्यमान नक्षत्र का उदय हुआ।

माधवराव सप्रे के 'हिन्दी केसरी' ने सन् १६०८ में 'राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। खंडवा के युवा अध्यापक माखनलाल चतुर्वेदी का निबंध प्रथम चुना गया। माधवराव सप्रे मध्यप्रांत में होनहार प्रतिभाओं की पहचान कर उन्हें आगे बढ़ाने, को इस दिशा में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित किया। यद्यपि अपने युग की हिन्दी संसार की इन दो महान हस्तियों का प्रथम सम्मिलन १६११ में हो पाया, तथापि उनके बीच गुरु–शिष्य का नाता तब तक पनप चुका था।

अप्रैल १६१३ में खंडवा के हिन्दी सेवी कालूराम गंगराड़े ने मासिक पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन आरंभ किया, जिसके सम्पादन का दायित्व माखनलालजी को सौंपा गया। सितम्बर १६१३ में उन्होंने अध्यापक की नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह पत्रकारिता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के लिए समर्पित हो गए। इसी वर्ष कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने साप्ताहिक 'प्रताप' का सम्पादन–प्रकाशन आरम्भ किया। ('प्रताप' कुछ वर्ष बाद दैनिक हो गया था।) १६१६ के लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के दौरान माखनलाल जी ने विद्यार्थी जी के साथ मैथिलीशरण गुप्त और महात्मा गाँधी से मुलाकात की। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने यहीं अपने काव्यादर्श 'एक भारतीय आत्मा' को पहचाना।

स्वतंत्रता संग्राम में उनकी तेजस्वी–ओजस्वी भागीदारी के अलावा माखनलाल जी को जानने के तीन माध्यम हैं। (महात्मा गाँधी द्वारा आहूत सन् १६२० के 'असहयोग आंदोलन' में महाकौशल अंचल से पहली गिरफ्तारी देने वाले माखनलाल जी ही थे। सन् १६३० के 'सविनय अवज्ञा' आंदोलन में भी उन्हें गिरफ्तारी देने का प्रथम सम्मान मिला)। उनके महान कृतित्व के तीन आयाम हैं : **एक** पत्रकारिता–'प्रभा', 'कर्मवीर' और 'प्रताप' का संपादन। **दो** माखनलाल जी की कविताएँ, निबंध, नाटक और कहानी। **तीन** राष्ट्रीय आंदोलन के लिए कार्यकर्ता तैयार करने और पत्रकारिता और पत्रकारों को संस्कारित करने वाले मनीषी के रूप में समादृत रहे हैं। सप्रेजी को माखनलाल चतुर्वेदी की लेखनी में अपार संभावनाओं से युक्त पत्रकार–साहित्यकार के दर्शन हुए। उन्होंने माखनलालजी माखनलाल जी के अभिभाषण /व्याख्यान।

४ अप्रैल १६२५ के जब खंडवा से माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' का पुनः प्रकाशन किया तब उनका आह्वान था, 'आइए, गरीब और अमीर, किसान और मजदूर, उच्च और नीच, जित और

पराजित के भेदों को ठुकराइए। प्रदेश में राष्ट्रीय ज्वाला जगाइए और देश तथा संसार के सामने अपनी शक्तियों को ऐसा प्रमाणित कीजिए, जिसका आने वाली संतानें स्वतंत्र भारत के रूप में गर्व करें'।

इसी अग्रलेख के अंतिम वाक्य से उनके निरभिमानी व्यक्तित्व व सोच का परिचय मिलता है, और कदाचित यही उनके संपादन की सबसे बड़ी शक्ति भी थी, 'प्रभु करे सेवा के इस पथ में मुझे अपने दोषों का पता रहे और आडंबर, अभिमान और आकर्षण मुझे पथ से भटका न पाए।' किसानों की दुर्दशा, उनका संगठित शक्ति के रूप में खड़े न होना और इस वजह से उनके कष्टों और समस्याओं की अनदेखी ना करना माखनलाल जी को बेचैन करता था।

'कर्मवीर' के २५ सितम्बर १६२५ के अंक में वे लिखते हैं–'उसे नहीं मालूम कि धनिक तब तक जिंदा है, राज्य तब तक कायम है, ये सारी कौंसिलें तब तक हैं, जब तक वह अनाज उपजाता है और मालगुजारी देता है। जिस दिन वह इंकार कर दे, उस दिन समस्त संसार में महाप्रलय मच जाएगा। उसे नहीं मालूम कि संसार का ज्ञान, संसार के अधिकार और संसार की ताकत उससे किसने छीन कर रखी है और क्यों छीन कर रखी है। वह नहीं जानता• कि जिस दिन वह अज्ञान इंकार कर उठेगा उस दिन ज्ञश्रान के ठेकेदार स्कूल फिसल पड़ेंगे, कॉलेज नष्ट हो जाएँगे और जिस दिन उसका खून चूसने के लिए न होगा, उस दिन देश में यह उजाला, यह चहल–पहल, यह कोलाहल न होगा।

फौज और पुलिस, वजीर और वाइसराय सब कुछ किसान की गाढ़ी कमाई का खेल है। बात इतनी ही है कि किसान इस बात को जानता नहीं, यदि उसे अपने पतन के कारणों का पता हो, और उसे अपने ऊँचे उठने के उपायों का ज्ञान हो जाए तो निःसंदेह किसान कर्मपथ में लग सकता है। माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्यिक अवदान का एक परिचय उर्दू के नामवर साहित्यकार रघुपति सहाय 'फिराक गोरखपुरी' की इस टिप्पणी से मिलता है–'उनके लेखों को पढ़ते समय ऐसा मालूम होता था कि आदिशक्ति शब्दों के रूप में अवतरित हो रही है या गंगा स्वर्ग से उतर रही है। यह शैली हिन्दी में ही नहीं, भारत की दूसरी भाषाओं में भी विरले ही लोगों को नसीब हुई। मुझ जैसे हजारों लोगों ने अपनी भाषा और लिखने की कला माखनलाल जी से ही सीखी।'

माखनलाल चतुर्वेदी ने ही मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित कराया था कि 'साहित्यकार स्वराज्य प्राप्त करने के ध्येय से लिखें।' नागपुर विश्वविद्यालय में भाषण करते हुए (२.१२.१६३४) माखनलाल जी ने साहित्य के संदर्भ में अपनी अवधारणा स्पष्ट की थी–'लोग साहित्य को जीवन से भिन्न मानते हैं, वे कहते हैं साहित्य अपने ही लिए हो। साहित्य का यह धंधा नहीं कि हमेशा मधुर ध्वनि ही निकाला करे जीवन को हम एक रामायण मान लें। रामायण जीवन के प्रारम्भ का मनोरम बालकाण्ड ही नहीं किंतु करुण रस में ओतप्रोत अरण्यकांड भी है और धधकती हुई युद्धाग्नि से प्रज्वलित लंकाकांड भी है।' १६४३ में उस समय का हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा 'देव पुरस्कार' माखनलाल जी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था। १६५४ में साहित्य अकादमी पुरस्कारों की स्थापना होने पर हिन्दी साहित्य के लिए प्रथम पुरस्कार दादा को 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया। 'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी ओजस्वी रचनाओं के रचयिता इस शेष पृष्ठ 11 पर

जिला बुलन्दशहर से हिन्दू सभा वार्ता का शुल्क मास मई २०१८

1.	पंतजलि मेगा स्टोर मालवीय मार्ग बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
2.	पृथ्वीराज चौहान महाविद्यालय मऊ–275101 (आजीवन)	1200/-
3.	डॉ० बी० एस० त्यागी, जे–210, जलवायु विहार, सेक्टर–25, नौएडा–201301 (गौतम बुद्ध नगर) (वार्षिक)	150/-
4.	मधुर मोटर फाइनेन्स कं०, लाजपतपुरी मार्केट खुर्जा अड्डा बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
5.	ठाकुर मदन पाल सिंह 5/491, लक्ष्मी नगर, बुलन्दशहर (न्नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
6.	शिवनन्दन गुप्ता द्वारा नेशनल बुक डिपो हॉस्पीटल रोड़ बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
7.	प्रशान्त जौहरी, एडवोकेट, धर्म सिंह वाली गली, चित्रांश नगर, साठा बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2018-19)	150/-
8.	संजीव, केबल ऑपरेटर 13/881, प्रीत विहार, बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
9.	संजय अग्रवाल द्वारा ड्रग कैम डिस्ट्रीब्यूटर्स 22, मेडिसन मार्केट बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
10.	के० बी० (पी०जी०) महाविद्यालय मिर्जापुर–231001 (आजीवन)	1200/-
	टोटल	3600/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रति,

श्री ईश्वर प्रसाद गुप्ता
पिता स्व. श्री पुनीत प्रसाद गुप्ता
संदीप आप्टिकल्स, प्यारे लाल चौक,
लाईन टैंक रोड़
रांची, झारखंड-८३४००१

विषयः अखिल भारत हिन्दू महासभा, झारखंड प्रदेश की प्रदेश कार्यकारिणी समिति को भंग करने की सूचना।

आपको सूचित किया जाता है कि सांगठनिक निष्क्रियता एवं पार्टी विरोधी गतिविधियों के कारण राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा के निर्देशानुसार अखिल भारत हिन्दू महासभा, झारखण्ड प्रदेश की कार्यकारिणी समिति को भंग कर दिया गया है। शीघ्र ही सदस्यता कार्य एवं जिला ईकाई का गठन किया जायेगा। तत्पश्चात प्रदेश कार्यकारिणी समिति का चुनाव होगा।

यह भी निर्देशित किया जाता है कि प्रदेश संगठन की किसी भी जिम्मेवारी का निर्वहन आप नहीं करेंगे तथा अखिल भारत हिन्दू महासभा, झारखण्ड प्रदेश के संबंध में कोई निर्णय नही लेंगे।

सधन्यवाद,

(चन्द्रप्रकाश कौशिक) राष्ट्रीय अध्यक्ष
(मुन्ना कुमार शर्मा) राष्ट्रीय महासचिव
(वीरेश त्यागी) राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 6 का

खूब लड़ी मर्दानी झांसी.....

शौर्य का प्रदर्शन किया। कालपी में महारानी और तात्या टोपे ने योजना बनाई और अंत में नाना साहब, शाहगढ़ के राजा, वानपुर के राजा मर्दनसिंह आदि सभी ने रानी का साथ दिया। रानी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और वहां के किले पर अधिकार कर लिया। विजयोल्लास का उत्सव कई दिनों तक चलता रहा लेकिन रानी इसके विरुद्ध थीं। यह समय विजय का नहीं था, अपनी शक्ति को सुसंगठित कर अगला कदम बढ़ाने का था।

इधर सेनापति सर ह्यूरोज अपनी सेना के साथ संपूर्ण शक्ति से रानी का पीछा करता रहा और आखिरकार वह दिन भी आ गया जब उसने ग्वालियर का किला घमासान युद्ध करके अपने कब्जे में ले लिया। रानी लक्ष्मीबाई इस युद्ध में भी अपनी कुशलता का परिचय देती रहीं। १८ जून १८५८ को ग्वालियर का अंतिम युद्ध हुआ और रानी ने अपनी सेना का कुशल नेतृत्व किया। वे घायल हो गई और अंततः उन्होंने वीरगति प्राप्त की। रानी लक्ष्मीबाई ने स्वातंत्र्य युद्ध में अपने जीवन की अंतिम आहूति देकर जनता जनार्दन को चेतना प्रदान की और स्वतंत्रता के लिए बलिदान का संदेश दिया।

शेष पृष्ठ 4 का

डायबिटीज कन्ट्रोलर चिकित्सा.....

दूध, मलाई या थोड़े शहद में मिलाकर सेवन करना लाभकारी सिद्ध हुआ है। शिलाप्रवंग वटी, शिवागुटिका या चन्द्रप्रभावटी के साथ शिलाजीत का प्रयोग करते रहने से आप मधुमेह के दुष्प्रभावों से बच सकते हैं। आहार–विहार एवं दिनचर्या दुरुस्त करें। मार्निंग और इवनिंग वॉक करें आलस्य त्यागें। चाय, चीनी, चावल, आलू, खोया की मिठाइयों का पूरी तरह त्याग करें। ग्रीन टी/हर्बल टी ही पीएँ। व्यायाम करें तनाव में न रहें। पेट साफ होना ही चाहिए। कब्ज, गैस है तो उसका उपचार करें। कब्ज दूर करने के लिए त्रिफला घनवटी २–२ सुबह–रात लें। हरड़ का प्रयोग करें।

जरा फिर सोचिए और स्वयं इन प्रश्नों के उत्तर खोजिए...

1. विश्व में लगभग 52 मुस्लिम देश है, एक मुस्लिम देश का नाम बतायें जो हज के लिए सब्सिडी देता हो?
2. एक मुस्लिम देश बताईये जहाँ हिन्दुओं के लिए विशेष कानून है। जैसे कि भारत मे मुसलमानों के लिए है?
3. किसी एक देश का नाम बताईये, जहाँ 85% बहुसंख्यकों को ''याचना'' करनी पड़ती है, 15% अल्पसख्यकों को संतुष्ट करने के लिए?
4. एक मुस्लिम देश का नाम बताइये, जहाँ का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री गैर–मुस्लिम है?
5. किसी 'मुल्ला'' या ''मौलवी'' का नाम बताइये, जिसने आतंकवादियों के खिलाफ फतवा जारी किया हो?
6. महाराष्ट्र, बिहार, केरल जैसे हिन्दू बहुल राज्यों में मुस्लिम मुख्यमंत्री हो चुके हैं, क्या आप कल्पना कर सकते है कि मुस्लिम बहुल राज्य ''कश्मीर'' में कोई हिन्दू मुख्यमंत्री हो सकता है?
7. 1947 में आजादी के दौरान पाकिस्तान में हिन्दू जनसंख्या 24% थी अब वह घटकर 1.7 प्रतिशत रह गई है, उस समय तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब आज का अहसान फरामोश बांग्लादेश) में हिन्दू जनसंख्या 30% थी जो अब 7% से भी कम हो गई है। क्या हुआ गुमशुदा हिन्दुओं का? क्या वहाँ (और यहाँ भी) हिन्दुओं के कोई मानवाधिकार है?
8. इस दौरान भारत में मुस्लिम जनसंख्या कट्टरवादी है?
9. यदि हिन्दू असहिष्णु हैं तो कैसे हमारे यहाँ मुस्लिम सड़कों पर नमाज पढ़ते रहते हैं? लाउडस्पीकर पर दिन भर चिल्लाते रहते हैं कि ''अल्लाह के सिवाय'' और कोई शक्ति नहीं है''?
10. सोमनाथ मन्दिर के जोर्णोद्धार के लिए देश के पैसे का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए ऐसा गाँधीजी ने कहा था, लेकिन 1948 में ही दिल्ली की मस्जिदों को सरकारी मदद से बनवाने के लिए उन्होंने नेहरू और पटेल पर दबाव बनाया, क्यों?
11. कश्मीर, नागालैण्ड अरूणाचल प्रदेश, मेघालय आदि में हिन्दू अल्पसंख्यक है, क्या उन्हें विशेष सुविधा मिलती है?
12. हज करने के लिए सब्सिडी मिलती है जबकि मानसरोवर और अमरनाथ जाने पर टैक्स देना पड़ता है, क्यों?
13. मदरसे और क्रिश्चियन स्कूल अपने–अपने स्कूलों में बाईबल और कुरान पढ़ा सकते हैं तो फिर सरस्वती शिशु मन्दिर में और बाकी स्कूलों में गीता और रामायण क्यों नही पढ़ाई जा सकती?
14. गोधरा के बाद मीडिया मे जो हंगामा बरपा, वैसा हंगामा कश्मीर के चार लाख हिन्दुओं की मौत और पलायन पर क्यों नहीं होता?

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का **पाकिस्तान ने हिंदू भक्तों के लिए....**

से बताया है कि प्रांतीय एसेंबली के एक सदस्य के आग्रह पर सरकार ने दो करोड़ रुपए जारी किए हैं। समाचार पत्र के अनुसार आसिफ ने बताया कि मंदिर का सौंदर्यीकरण कार्य शीघ्र शुरू होगा। एक टीम ने स्थल का दौरा किया है और कार्य शुरू करने की योजना बताई। जहां पर प्रतिमाएं रखी गयी हैं, उस मुख्य कक्ष को सौंदर्यीकरण की समाप्ति तक बंद रखा जाएगा। आसिफ के हवाले से समाचार पत्र ने बताया है एक बार सौंदर्यीकरण का काम पूरा हो जाएगा तो यहां और लोगों के एकत्र होने के लिए जगह हो जाएगी। अधिकारी ने बताया कि मंदिर में जगह होने से आस पास के दोनों शहरों और नजदीकी इलाकों के श्रद्धालुओं को सुविधा हो जाएगी। कांजी और उजागर मल राचपाल ने १८६७ में इस मंदिर का निर्माण करवाया था। २०१७ में पेशावर उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति अतीक हुसैन शाह की अध्यक्षता वाली पीठ ने हिंदू समुदाय के लोगों को संविधान की धारा २० के तहत खेबर पख्तूनख्वाह प्रांत के शिवजी मंदिर में पूजा–अर्चना की इजाजत दी थी। संपत्ति विवाद की वजह से यह मंदिर धार्मिक गतिविधियों के लिए प्रतिबंधित था। साल २०१३ में एक गैर सरकारी संगठन ने पेशावर उच्च न्यायालय की ऐबटाबाद पीठ के समक्ष याचिका दायरा की थी कि उन्होंने कानूनी मालिक से यह संपत्ति खरीदी है। याचिकाकर्ता ने दलील दी थी कि बंटवारे के बाद से यह एनजीओ इस मंदिर की देखभाल करता आ रहा है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने मांग की है कि पाकिस्तान सरकार पाक स्थित हिन्दू मंदिरों को सुरक्षा प्रदान करें।

शेष पृष्ठ 1 का **भारत और अमेरिका मिलकर......**

सुरक्षा रखी जाए। पाकिस्तान की तरफ से जम्मू कश्मीर में भारत–पाक सीमा पर पिछले नौ दिनों से की जा रही भारी गोलाबारी की वजह से कम से कम ११ लोगों की मौत हो गई जबकि ६० अन्य घायल हो गए। पाकिस्तान की तरफ से कल गोलाबारी रुकी है। गृह मंत्री ने भारत– पाक सीमा के संदर्भ में बाड़बंदी के काम पर संतुष्टि व्यक्त की जहां ६७ फीसद काम पूरा हो चुका है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारत सरकार से मांग की है कि भारतीय सीमा पर घुसपैठ तुरन्त बन्द हो सीमा पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था हो ताकि कोई आंतकी सीमा में घुसपैठ न कर सके।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये

द्विवार्षिक...300/- रुपये

आजीवन सदस्य..1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 5 का **हम जीवन के प्रति.....**

पुरुषार्थ का ही फल है जो वर्तमान में फलदायी हो रहा है। पुरुषार्थ की प्रक्रिया यदि निरंतर, अनवरत एवं अविराम जारी रहे तो भाग्य के मिटने व मनचाहे नये भाग्य के निर्माण में देर नहीं लगती। पुरुषार्थ का प्रचंड पवन आत्मा पर छाये भाग्य के समस्त आवरणों को छिन्न–भिन्न कर देता है। तभी तो ऋषिवाणी कहती है–''मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं आप है।'' शेक्सपीयर ने इसी संदर्भ में कहा है कि बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी अपने वर्तमान दुखों के लिए रोया नहीं करते, अपितु वर्तमान में दुखों के कारणों को रोका करते हैं। अक्सर हमारे अन्दर अनजाने ही यह धारणा बन जाती है कि यदि हमें इच्छित नहीं मिला तो हम सुखी नहीं रह पायेंगे। यह धारणा निराधार है। कई बार वर्तमान में हमें जो असफलता अथवा विपत्ति दिखलाई पड़ती है, वही हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित होती है, जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा भी है कि सबसे अधिक आनंद इस भावना में है कि हमने मानवता की प्रगति में कुछ योगदान दिया है, भले ही वह कितना ही कम, यहाँ तक कि बिल्कुल ही तुच्छ क्यों न हो।

माइकल केन ने अपनी सफलता का रहस्य उद्घाटित करते हुए अपनी पुस्तक 'एक्टिंग इन फिल्म' की एक भूमिका में खूबसूरत पंक्तियाँ लिखी थीं कि–''मेरे इस पुस्तक को लिखने के एक वजह है। बहुत से अभिनेता हैं, जो मेरे जितना या मुझसे अधिक जानते हैं। लेकिन इस व्यवसाय का एक हिस्सा व्यवसाय से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। वह एक समुदाय है। एक समुदाय वह होता है, जहाँ लोग एक–दूसरे के साथ अपने अनुभव बाँटते हैं। आज मैं जो भी जानता हूँ, वह उस अनुभव का परिणाम है जो सफल अभिनेताओं ने मेरे साथ बाँटा है। मैं इस मशाल को आगे बढ़ा रहा हूँ।'' दूसरों की मदद करने का कितना अद्भुत तर्क है।

पेशा हम कोई भी चुनें लेकिन उसका उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों की सेवा करना होना चाहिए। इसका सीधा लाभ मन की शांति और संतोष के रूप में मिलेगा तथा उपफल के रूप में पैसा भी मिलेगा। जीवन को किसी महान उद्देश्य के लिए समर्पित करना ही परमानन्द का मार्ग है। परमानन्द से ही महान जीवन का उद्देश्य फलित होता है और इसे ही सफल जीवन कहा जा सकता है।

शेष पृष्ठ 9 का **माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय.....**

महाकवि के कृतित्व को सागर विश्वविद्यालय ने १६५८ में डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया। १६६३ में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। १० सितम्बर १६६७ को राष्ट्रभाषा हिन्दी पर आघात करने वाले राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में माखनलाल जी ने यह अलंकरण लौटा दिया। १६–१६ जनवरी १६६५ को मध्यप्रदेश शासन की ओर से खंडवा में 'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी के नागरिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। तत्कालीन राज्यपाल श्री हरि विनायक पाटसकर और मुख्यमंत्री पं. द्वारिकाप्रसाद मिश्र तथा हिन्दी के अग्रगण्य साहित्यकार–पत्रकार इस गरिमामय समारोह में उपस्थित थे। तब मिश्रजी के उद्गार थे–'सत्ता, साहित्य के चरणों में नत है।' सचमुच माखनलाल जी के बहुआयामी व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व की महत्ता सत्ता की तुलना में बहुत ऊँचे शिखर पर प्रतिष्ठित है और सदैव रहेगी।

शेष पृष्ठ 2 का **बेमौत मरते ये.....**

मिलते हैं, न ही श्रीराम की तरह पिता की आज्ञापालन करने वाले पुत्र मिलते हैं, श्रवण जैसे पुत्रों का मिलना तो केवल किताबों में ही मिल सकता है, एकलब्य तथा अरुणि जैसे गुरु–भक्त शिष्य तो सुनने को ही नहीं मिलते हैं, यमराज से अपने पति परमेश्वर सत्यवान की जान बचाने वाली सावित्री का मिलना तो असंभव ही है। आज सभी रिश्ते सिर्फ नाम के है। उनमें त्याग, विश्वास, समर्पण भावना, सहयोग, सेवा–श्रुषा, प्रेम–प्यार आदि सिर्फ दिखावे की बातें बनकर रह गई है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, तथा अहंकार ने सभी रिश्तों को बेमौत मार दिया है।

शेष पृष्ठ 12 का **राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गीत....**

किया गया। चरखे की जगह अशोक चक्र ने ली। गांधी जी राष्ट्रीय ध्वज के रूप में कांग्रेस के झण्डे को बरकार रखना चाहते थे क्योंकि उन्होंने सोचा कि 'कांग्रेस प्रारंभ से ही अपनी स्थापना से राष्ट्रीय है'' लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अशोक चक्र को चरखे की जगह सही रूप में चुना गया था क्योंकि शांति दूत राजा अशोक शांति का प्रतिरूप है, एक ऐसा शासक जिसने सत्ता छोड़ दी थी और एक भिक्षु बन गया था। वह सार्वभौमिक भाइचारे में विश्वास करता था। तिरंगे के रंग, भारत के सभी समुदायों और क्षेत्रों को परिभाषित करते हैं। केसरी आध्यात्मिक है, हरा उर्वरता और सफेद शांति का प्रतीक है। तिरंगा भारत की आजादी की लड़ाई में एक उज्ज्वल सितारे की तरह चमकता रहा, इसे राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में लाल किले की प्राचीर से साल–दर–साल फहराया गया है। राष्ट्रीय ध्वज हमारा सबका ध्वज है! इसे हम सबके हाथ में, मोरे हाथ में, आपके हाथ में, भगवा, हरा और सफेद रंगों में विश्वास करने वालों के हाथ में लहराने दो!

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गीत की कहानी

प्रो.सी.डी. वर्मा

देशभक्तों का खून देश का बीज है। हमें अपनी स्वतंत्रता में उनके योगदान को स्मरण रखना चाहिए और उनके बलिदानों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए। उन्होंने देश की सेवा में अपने जीवन का बलिदान दिया ताकि हम स्वतंत्रता में जी सकें। आज मैं स्वतंत्रता के दो महत्वपूर्ण नायकों को याद करता हूं। उत्तर भारत के श्यामलाल गुप्त और दक्षिण भारत के पी.वेंकैया। शायद कई लोग उनके बारे में नहीं जानते। यह श्याम लाल गुप्त ही थे जिन्होंने प्रसिद्ध गीत 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' लिखा था।.... आज भी यह गान, जो राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, राष्ट्रीय अवसरों पर समूह गान के रूप में गाया जाता है और पी.वैंकैया ने तिरंगा डिजाइन किया जो आज हमारा ध्वज है। श्याम लाल गुप्त पुत्र विश्वेशर गुप्त और कौशल्या गुप्त का जन्म १८६३ में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले के नारवाल गांव में हुआ था। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने अपनी देशभक्ति और साहित्यिक लगन की अभिव्यक्ति को संतुष्ट करने के लिए एक मासिक पत्रिका 'सचिव' की शुरूआत की। इस पत्रिका के माध्यम से वह गणेश शंकर विद्यार्थी के संपर्क में आए थे। उनके आग्रह पर वह कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए और अंततः १६२० में फतेहपुर जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्ष बन गए और महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलने वाले भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हो गए। उस समय तक कांग्रेस ने तिरंगा को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में डिजाइन और अनुमोदित किया था। अब एक राष्ट्रीय गीत की आवश्कयता थी जो भारत के लाखों लोगों के दिल और दिमाग को प्रेरित कर सके। गणेश शंकर विद्यार्थी श्याम लाल के साहित्यिक कौशल से अवगत और आश्वस्त थे। इसलिए उन्होंने यह कार्य उन्हें सौंपा। श्यामलाल देशभक्ति की लौ से इतने ओत–प्रोत थे कि उन्होंने राष्ट्रीय गीत केवल एक रात में लिख डाला और इस प्रकार राष्ट्रीय गीत 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' का जन्म हुआ। श्याम लाल गुप्त ने विद्यार्थी जी को बताया कि गीत लिखते समय उन्होंने ऐसा अनुभव किया मानों उनकी कल्पना में भारत माता उनके सामने बैठी हुई हैं और उन्हें राष्ट्रीय गीत लिखने के लिए प्रेरित कर रही हैं। विद्यार्थी जी ने उस गीत को तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष पुरुषोत्तम दास टंडन को सौंप दिया। महात्मा गांधी के निर्देशों पर यह गाना १६३८ में हरिपुर कांग्रेस सत्र में समूह गान के रूप गया गया था। इस कांग्रेस सत्र में सुभाष चन्द्र बोस ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया था। १६६७ में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लाल किले में आयोजित एक समारोह में श्याम लाल गुप्त को ताम्रपत्र प्रदान कर सम्मानित किया था। १६६७ से पहले लोग राष्ट्रीय गीत के निर्माता (रचयिता) के विषय में नहीं जानते थे....!

तिरंगा हमारा राष्ट्रीय ध्वज, हमारी स्वतंत्रता, हमारी देशभक्ति, हमारे गौरव का प्रतीक है लेकिन हम उस व्यक्ति से बेखबर हैं जिसने राष्ट्रीय ध्वज बनाया है। वह मासुलीपट्टनम, आंध्र प्रदेश के कांग्रेस के पी. वेंकैया थे। १६१८ में उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज के विचार की कल्पना की और एक डिजाइन तैयार करने में तीन साल लगाए। १६२१ में जब उन्होंने महात्मा गांधी को राष्ट्रीय ध्वज का डिजाइन प्रस्तुत किया तो उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। महात्मा गांधी डिजाइन और रंग का एक ऐसा समावेश चाहते थे जो एकता, अहिंसा और सामाजिक सद्भाव का प्रतिनिधित्व करे। लाल हंसराज जो उत्तर भारत के महान क्रान्तिकारी और डीएवी कालेज लाहौर के पूर्व प्रधानाचार्य थे, ने सुझाव दिया था कि राष्ट्रीय ध्वज में उस पर एक प्रतीक के रूप में चरखा होना चाहिए। पी.वेंकैया राष्ट्रीय ध्वज का एक दूसरा डिजाइन लेकर आए जिसमें लाल, हरे और सफेद रंग की तीन धारियां थी और चरखा सभी तीनों बैंड (धारियों) को कवर करता था। महात्मा गांधी ने इसे अनुमोदित किया लेकिन रंग योजना का क्रम बदल दिया। शीर्ष पर सफेद, बीच में हरा और नीचे लाल रंग। उनके अनुसार सफेद रंग सभी धर्मों के अल्पसंख्यकों का शांति और सरलता का प्रतिनिधित्व करता है। हरा मुसलमानों का और लाल हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं इस प्रकार महात्मा गांधी ने अल्पसंख्यकों को बहुमत पर प्राथमिकता दी। अहमदाबाद में १६२६ में लाल रंग को शीर्ष पर केसरी रंग द्वारा बदल दिया गया था तथा बीच में सफेद और नीचे हरे रंग को लाया गया। चरखा बनाए रखा गया था लेकिन सफेद पट्टी पर रखा गया।....

महात्मा गांधी ने कहा कि तिरंगा सभी धर्मों का प्रतिनिधित्व करता है और सब धर्मों के सामजस्य का प्रतीक है। जब भारत को १६४७ में स्वतंत्रता मिली तो तिरंगे को और संशोधित शेष पृष्ठ 11 पर

कबिरा खड़ा बजार में

देश की जुमलेबाज सरकार

देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतें रेकॉर्ड लेवल पर पहुंच गई हैं। अलग–अलग शहरों में तेल की कीमतें अलग इसलिए किए हैं, क्योंकि उन पर टैक्स भी राज्य अलग–अलग लगाते हैं। अब इसमें यह सवाल पूछना बेकार है कि सरकार ने आधी रात को संसद में जीएसटी की शुरूआत का जो तामझाम किया था, उसका उद्देश्य कहां गुम हो गया। एक देश, एक टैक्स भी आखिरकार जुमला ही साबित हुआ। २०१३ में अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बहुत बढ़ गई थीं और उसका असर तेल के आयात देशों पर बहुत पड़ा था। तब पेट्रोल ७६.०६ रुपये तक पहुंच गया था। भारत भी अपनी जरूरत का तेल आयात ही करता है, लिहाजा कीमतें उसके नियंत्रण में नहीं थीं। तब भाजपा के प्रचारक और नेता इस बात को अच्छी तरह समझते थे, फिर भी जनता को मूर्ख बनाने और सत्ता हथियाने के लिए नारा दे दिया बहुत हुई जनता पर पेट्रोल–डीजल की मार, अबकी बार मोदी सरकार। इस पोस्टर पर तब प्रधानमंत्री उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी की एक ऐसी तस्वीर लगी है, जिसकी मुखमुद्रा देखकर अहसास होता है कि ये शख्स सचमुच बदलाव करेगा। ऐसे कई पोस्टरों, विज्ञापनों को देखकर जनता झांसे में आ गई और फिर जो हुआ। उसके वर्णन की आवश्यकता शायद नहीं है। भाजपा सत्ता में चार साल बिता चुकी है और उसके तमाम वादे जुमले ही साबित हो रहे हैं। मोदीराज में वादों का जुमलों में बदलना भी अपने आप में एक रिकार्ड ही है। पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का कहना है कि पेट्रोलियम नियार्तक देशों के संगठन यानी ओपेक देशों में तेल के कम उत्पादन की वजह से अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड के दाम बढ़ गए हैं। इसके पीछे डिमांड में वृद्धि होना, सऊदी अरब की अगुवाई में तेल उत्पादक देशों का उत्पादन में कमी करना, वेनेजुएला में उत्पादन में गिरावट और अमेरिका का ईरान पर प्रतिबंध लगाने का फैसला जैसे कारण हैं। मंत्री महोदय ने जो वजहें गिनाई हैं, वे सभी जायज हैं। लेकिन यह सब एक दिन में तो नहीं हुआ। बीते कुछ महीनों से अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी हलचल होना शुरू हो गई थी। तो क्या मोदी सरकार इतनी बेखबर थी कि उसने इस स्थिति की कोई तैयारी ही नहीं की थी। जब तक कर्नाटक चुनाव के लिए मतदान नहीं हुआ, पेट्रोल–डीजल की कीमतें नहीं बढ़ीं, लेकिन चुनाव खत्म होते ही जनता पर बोझ बढ़ाने में सरकार को जरा सा संकोच नहीं हुआ। अंतरराष्ट्रीय बाजार के आगे हम मजबूर हैं, जैसे तर्क पहले ही गढ़ लिए गए थे। अगर चुनाव तक कीमतों पर नियंत्रण रखा जा सकता है। तो बाद में पूरा न सही, थोड़ा–बहुत अंकुश तो लगाया जा ही सकता है। बशर्ते इसके लिए इच्छाशक्ति हो। लेकिन जनता को राहत देने जैसी कोई बात मोदी सरकार की प्राथमिकता सूची में नजर नहीं आती। हमारे पड़ोसी देशों पर भी अंतरराष्ट्रीय कीमतों का असर होता होगा, लेकिन कीमतें देखें तो श्रीलंका में एक लीटर पेट्रोल ४६.६० रुपये में मिल रहा है। पाकिस्तान में ५०.६० रुपये, नेपाल में ६६.६० रुपये और बांग्लादेश में ६८.४० रुपये प्रति लीटर है। जिस मलेशिया का उदाहरण देकर सरकार ने जीएसटी को सही बताया था, वहां भी अब जीएसटी खत्म हो गया है। साथ ही पेट्रोल के दामों को भी हर हफ्ते घटाने–बढ़ाने की जगह एक ही कीमत तय करने और जरूरत पड़ने पर सब्सिडी देने की व्यवस्था महातिर सरकार ने की है। क्या मलेशिया के इस उदाहरण से मोदीजी कुछ नहीं सीखना चाहेंगे। यह सही है कि धरती के नीचे तेल का भंडार सीमित है और उसका उपयोग सोच समझ कर होना चाहिए। इसकी कीमतों पर भी सरकार का अकेले नियंत्रण नहीं होता। सरकार को सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को सुरक्षित, सुचारू और मजबूत बनाने के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए। ताकि तेल की खपत थोड़ी कम हो और जनता को राहत मिले।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 20 जून से 26 जून 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।